वर्ष 8, स्वतंत्रता दिवस Postal Regd. No.: DNB/009/2016-18 10/-

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक समाचार पत्रिका

अनन्त सोच

बदलेगा सोचने का नजरिया

स्वतंत्रता दिवस अंक 2020

देश को बचाना है

कोरोना को हराना है

RNI No. : JHAHIN/2013/51058

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ

हरिद्वार पाठक
क्षेत्रिय आयुक्त, क्षेत्र (2)
सीएमपीएफ (आसनसोल)

गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ

डॉ. के.सी. श्रीवास्तव
रिजनल ऑफिसर
धनबाद जोन

अनन्त सोच परिवार के तरफ से समस्त देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस 2020 की हार्दिक शुभकामनाएँ

प्रतिदिन के समाचार प्राप्ति हेतु अनन्त सोच की वेब साईट **www.anantsoch.com** पर जाकर बेलआईकॉन प्रेस करके सब्सक्राईब करें

झारखण्ड

झारखंड-बिहार का नं-01
मासिक समाचार पत्रिका
अनन्त सोच
वर्ष-8 अंक - स्वतंत्रता दिवस
अगस्त-2020

प्रकाशक एवं प्रधान संपादक
हरिहर नाथ त्रिवेदी

सह-संपादक
कौशल
ओमप्रकाश शुक्ला

उप-संपादक
संवाददाता
मनीष रंजन,
प्रमोद कुमार अग्रवाल
रोहित शुक्ला
श्रवण झा

बिहार प्रमुख
सौरभ कुमार
डॉ आर.लाल. गुप्ता

कम्प्यूटर एवं सज्जा
हरिहर नाथ त्रिवेदी

प्रधान कार्यालय
जे.सी. मल्लिक रोड,
नेपाल काली मंदिर के नजदीक,
हीरापुर धनबाद (झारखंड),
826001
फोन- 0326-2225265
मो. 09473100666
08210777101
Email- anant.soch@gmail.com

एक नजर इधर भी

4 सम्पादकीय
5 जिंदगी कोरोना वायरस के संग
7 शिव पुराण में कोरोना के जिक्र के दावे
8 कोरोना वायरस से भी खतरनाक थी...
10 भारत माता के लाल
13 सुशांत सिंह राजपूत
16 राष्ट्रीयता के प्रहरी
22 देश भर के साधु-संतों की संस्थाओं में
23 तप और साधना का पारंपरिक रूप
24 अघोरेश्वर के प्रसाद से मिली...
26 शिक्षा के क्षेत्र में डॉ के.सी. श्रीवास्तव...
27 स्फटिक की विशेषताएं
30 युवाओ के दिमाग पर मारिजुआना का असर
32 भोलेनाथ को क्यों प्रिया है
34 क्रुप
35 कभी भुलाए नहीं जा सकेंगे
37 उम्रभर लंबी सड़क

प्रकाशक एवं मुद्रक हरिहर नाथ त्रिवेदी
द्वारा
अनन्त प्रिंटर्स,
जे.सी. मल्लिक रोड, हीरापुर,
धनबाद-826001 (झारखंड) से मुद्रित व
जे.सी. मल्लिक रोड, हीरापुर, धनबाद.82600
(झारखंड) से प्रकाशित
संपादक एवं स्वामी-हरिहर नाथ त्रिवेदी
RNI Reg. No.- JHAHIN/2013/51058

"अनन्त सोच" का अंक आपके हाथ में है, यह अंक आपको कैसा लगा, आप अपनी बेबाक प्रतिक्रिया हमें जरूर हमारे **Email.- anant.soch@gmail.com** *या* **Whatsapp No. 9473100666** *पर भेजें, हम चाहते हैं कि आपकी भावनाओं एवं परामर्श के मद्देनजर आगामी अंक में सुधार करें।*

अनन्त सोच में प्रकाशित सभी पद अवैतनिक हैं एवं प्रकाशित सामग्री पर सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है, पत्रिका में प्रकाशित सामग्री लेखक के अपने विचार हैं। हम पाठक के दृष्टिकोण एवं उनके विचारों का सम्मान करते हैं। आप अपनी प्रतिक्रिया या विचार पत्रिका के माध्यम से प्रकट कर सकतें हैं। पत्रिका एक-दूसरे के विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम बने ऐसा हमारा उद्देश्य है।

पत्रिका से संबंधित सभी मामले केवल धनबाद न्यायालय में निपटाये जायेंगे।

संपादकीय

आजादी की कीमत बलिदान की सूरत पर गौर किया जाए तो हमें यह पता चलेगा कि इस आजादी के लिए हमने कितना बलिदान किया है। उन बलिदानों का ही नतीजा है कि आज हम अपने देश में खुली हवा में जी रहे हैं।

आजादी के इतने दशक गुजरने के बाद भी हमारा देश आज पूर्णतः आजाद प्रतीत नहीं होता है। उस वक्त हमारा देश अंग्रेजों का गुलाम था जिसे भगाने के लिए हमारे देश के कई बलिदानियों ने हस्ते–हस्ते अपना बलिदान दे दिया। उनका बलिदान सार्थक भी हुआ। हमारे देश में अपना तिरंगा लहराया।

परन्तु आज की स्थिति से यह जाहिर होता है कि आज हमारे देश को गुलामी की ओर ले जाने वाले कोई दुश्मन नहीं बल्कि अपने ही लोग हैं। रश्मि रथी में रामधारी सिंह दिनकर ने सही लिखा है ''जब बन्धु विरोधी होते हैं, सारे कुलवासी रोते हैं'' शायद यही बात आज चरितार्थ होती नजर आ रही है। आज हमें किसी और से नहीं लड़ना है बल्कि अपने–आप से लड़ना है। हमें अपनेआप से लड़ कर परिवर्तन में अपनी सार्थक भागीदारी निभानी है। इसके लिए हमें अपने प्राणों का बलिदान नहीं देना है बल्कि अपने विचारों, संस्कारों, एवं परंपराओं में लाकर सही मायने में आजादी हासिल करनी है।

आज हमें अंग्रेजों से नहीं बल्कि अपने नैतिक मूल्यों में सुधार लाकर भ्रष्टाचार, व्यभिचार एवं कुसंस्कारों से लड़कर अपने देश को आजादी के सही मायने तलाशना है।

हमारे देश पर कई दुश्मन देशों की बुरी नजर टिकी हुई है। परन्तु वे इस बात को भूल चुके हैं कि हमारे देश के प्रत्येक व्यक्ति के रगों में देश भक्ति का खून दौड़ता है। आपस में चाहे कितने ही मतभेद हों परन्तु देश पर अगर कोई बाहरी खतरा मंडराने लगता है तो हमारे देश के विभिन्न दल जो आज एक दूसरे का विरोध कर रहे है या समर्थन कर रहे हैं बाहरी दखलअंदाजी वे बर्दास्त नहीं कर सकते हैं। तो दुश्मन देश अगर यह समझने की भूल करता है कि भारत में दलगत फूट है तो यह उनकी मुर्खता है।

हाँ हमें इस बात का भान होना चाहिए कि जब हमारा देश अंग्रेजों का गुलाम हुआ था तो अंग्रेज हमारे देश में व्यापार करने के बहाने घुसे थे। आज चाईना हमारे देश में व्यापार के जरिए अपना पाँव पसारता जा रहा है। आज हमें चाईना के वस्तुओं का बहिस्कार करना होगा तभी हम अपने देश को आजाद रख पाएंगे । इस पर हमारे देशवासी कदम भी उठा चुके हैं। एवं चाईना की बनी वस्तुओं का बहिष्कार शुरू हो चुका है।

आज चाईना से निकला कोरोना वायरस पूरी दुनिया पर अपनी छाप छोड़ चुका है। परन्तु हमें इससे घबड़ाने की आवश्यकता नहीं है बल्कि इसका सामना करते हुए अपने देश को इस वायरस की गुलामी से आजाद करना है। हमें यह प्रण लेना होगा कि इस कोरोना रूपी दुश्मन को हम बहुत जल्द ही अपने देश से मार भगाएंगे। इसके लिए हमारे देश के बड़े–बड़े वैज्ञानिक दिन–रात लगे हुए हैं। बहुत जल्द ही इस कोरोना रूपी महामारी का समाधान हमारे देश के वैज्ञानिकों के हाथों में होगा। हमें केवल धैर्य से काम लेना है। साथ–साथ सरकार द्वारा इस महामारी से बचाव के लिए जो सुझाव दिए जा रहे हैं, उस पर अमल करते हुए हमें विजय पाना है।

हरिहर नाथ त्रिवेदी

–हरिहर नाथ त्रिवेदी

हम आपके साथ हैं

देश के भ्रष्ट प्रशासनिक तंत्र में कई बार ऐसा होता है कि सारे साक्ष्यों, प्रमाणों के बावजूद आपकी समस्याएँ दूर नहीं हो पातीं। आपको न्याय नहीं मिल पाता। हम मीडिया के दायित्वों को समझते हुए आपकी समस्या को प्रकाशित करके आपके संघर्ष में सहभागी होंगे, बस समस्त प्रमाणों के साथ आप हमें अपनी समस्या लिख भेजिए या प्रधान कार्यालय में संपर्क कीजिए।

सम्पादक
अनन्त सोच

जिंदगी कोरोना वायरस के संग

-मनीष रंजन

आज पूरी दुनिया को कोरोना वायरस कोविड–19 ने जिस रूप से जकड़ लिया है उस रूप में पूरी दुनिया में इस संक्रमण को रोकने के लिए वैक्सीन बनाने में जो रिसर्च चल रहा है वह अभूतपूर्व है। इस असामान्य परिस्थिति से निपटने के लिए उपाय भी असामान्य होते हैं । अभी तक के रिसर्च में यह सामने आया है कि लगभग सभी शक्तिशाली देशों ने इनसानों पर परीक्षण शुरू भी कर दिया है। यह परीक्षण तीन स्तरीय होता है, इसलिए इसे बनाने में भी वक्त लगेगा। अभी रूस ने परीक्षण शुरू किया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के प्रतिनिधि डॉक्टर डेविड नापारो ने कहा है कि हम पक्के तौर पर नहीं कह सकते हैं की कोविड–19 की वैक्सीन तैयार हो ही जाएगी और यदि हो भी गई तो गुणवत्ता व सुरक्षा की दृष्टि से कसौटी पर कितना खरा उतरेगा यह सोचने वाली बात होगी। उनके इस वक्तव्य से दुनिया भर की सरकारें स्वास्थ्य संगठनों और लोगों के बीच चिंता का एक विषय हो गया है।

उनके अनुसार आने वाले दिनों में लोगों को इस वायरस से बचने के उपायों को ही ठोस उपचार समझें। वर्तमान विज्ञान यह बताता है की वह अपनी सीमाओं को छुपाता नहीं है। दशकों के अध्ययन एवं रिसर्च के बाद भी कुछ वायरस एवं बीमारियों का तोड़ नहीं ढूंढ पाए हैं। एचआईवी का उदाहरण सबके सामने है । पिछले चार दशकों से इस वायरस की वैक्सीन ढूंढने में लोग

लगे हैं और आज भी दुनिया के कई देशों में रिसर्च चल रहे हैं। आज तक इस वायरस की कोई वैक्सीन नहीं बन सकी है। पिछले चार दशकों में तीस करोड़ से भी ज्यादा लोग दुनिया भर में इसकी भेंट चढ़ चुके हैं। एचआईवी के संक्रमण से बचाव अपेक्षाकृत आसान है पर इन्होंने भी इस इनसानी जीवन शैली को भी प्रभावित किया है।

यह सच है कि जागरूक लोग अब इनकी जद में कम आ रहे हैं । कोविड–19 से निपटने में भी जागरूकता ही फिलहाल सबसे बड़ी दवा है जो नजर भी आ रहा है। न्यूजीलैंड, वियतनाम एवं फिजी आईलैंड जैसे देशों ने यह दिखाया कि इसे दवा से नहीं सिर्फ जागरूकता से ही जंग जीती जा सकती है । पिछले एक सौ पचास दिनों में इन देशों में एक भी पॉजिटिव मरीज नहीं आए हैं। वहां अब सभी चीजों पर पाबंदी हट गई है। कोविड 19 वैक्सीन के रूप में कोई विकल्प नहीं आने की स्थिति में हमें अपने जीवन शैली में काफी बदलाव करने पड़ेंगे। कोरोना संक्रमण के रोज–रोज बढ़ते आंकड़ों से सहमी दुनिया को अब कबूल करना पड़ेगा कि अब हमें वायरस के साथ ही जीना है। इसके लिए उसे अपने जीवन शैली को ही बदलनी होगी।

अब उसे कचरे वाली जिंदगी से निकल कर सोच समझकर स्वच्छ जिंदगी को लेकर सोचना होगा। विदेशों में तो आबादी कम है एवं अधिकांश देश अनुशासित देशों में गिने जाते हैं जहां के लोग कानून का पालन करना अपना धर्म समझते हैं। ऐसी जिंदगी जीने के लिए हमारे देश के लोगों में एक क्रांतिकारी जागरूकता वाली सोच रखनी होगी।

दूसरों के बारे में भी सोचना होगा तभी यहां के लोगों में थोड़ी सोच आएगी। इस वैश्विक बीमारी से निपटने के लिए अपनी जीवनशैली को ही बदलनी होगी। सरकार कितने कानून बनाएगी। कोई भी प्रशासन खासकर हमारे देश के 130 करोड़ आबादी वाले देश के लोगों के साथ कितने दिनों तक सख्ती बरत सकती है। एक छोटी अवधि तक ही सख्ती बरती जा सकती है। अंत में इनसानी लोगों को ही कायदे कानून के पालन करने वाली सोच रखनी होगी। जब सवाल जिंदगी और मौत का हो तो लोगों के पास तीसरा कोई विकल्प नहीं होता।

सोशल एवं फिजिकल डिस्टेंसिंग को बरतते हुए संक्रमित लोगों की शिनाख्त जब लोगों के बीच भेदभाव की होगी तभी इस महामारी पर जीत भी मिलेगी। कोविड–19 ने हमारे जीने के अंदाज पर हमेशा के लिए कुछ चीजें थोप दी है जिससे हमारे पास उन्हें अपनाने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। उसने हमें भीड़ का हिस्सा ना बनने की एक बहुत बड़ी सीख दी है तथा स्वच्छ रहते हुए सामाजिक आडंबरों को छोड़कर अपने जीवन चक्र में भारी बदलाव करने की भी सीख दी है। उसे हमें किसी भी कीमत पर अपनाना ही होगा। हमें किसी भी हालत में समाधान का हिस्सा बनना है। आज देश में सभी चीजें धीरे धीरे सामान्य होती दिख रही है लेकिन लोगों में जागरूकता की अभी भी बहुत कमी है।

दुनिया के कई देश वैक्सीन निकालने की होड़ में शामिल हो गए हैं, भारत भी उनमें से एक है । अब देखना है की यह वैक्सीन कितनी सफल होगी और यह वायरस को किस तरह शरीर में फैलने से रोकेगी।

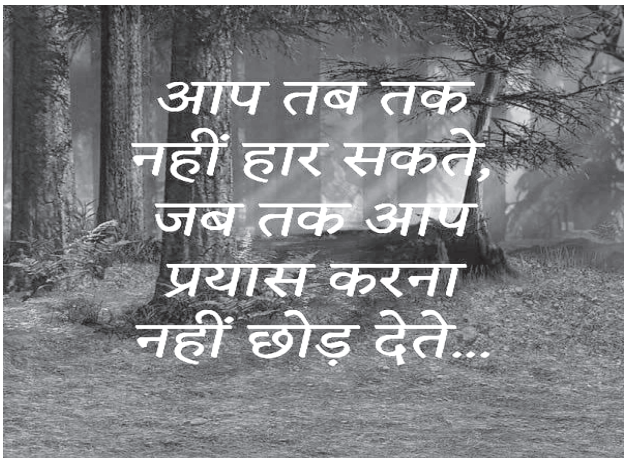

शिवपुराण में कोरोना के जिक्र के दावे वायरल, जानें इनकी सच्चाई

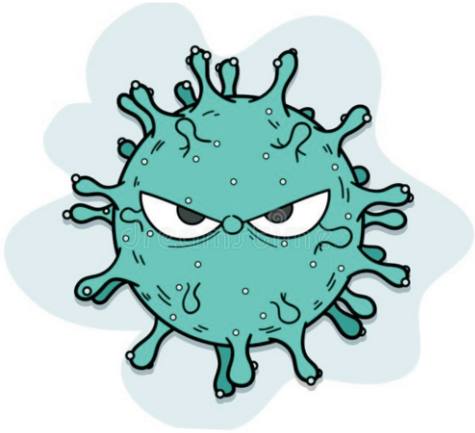

देश में कोरोना वायरस अपना कहर बरपा रहा है, हर रोज मिल रहे नए मामलों के कारण लोगों के मन में डर का माहौल है और ऐसे में सोशल मीडिया में कई तरह के दावे वायरल हो रहे हैं। जिसमें शिव पुराण में कोरोना वायरस के जिक्र का दावा भी है। जहां एक तरफ लोग डरे हुए हैं वहीं सोशल मीडिया में वायरल हो रहे इन दावों पर कुछ लोग यकीन भी कर रहे हैं। लेकिन इन दावों में कितनी सच्चाई है यह भी जानना जरूरी है। इसलिए हम आपको बताते हैं कि यह दावे कितने सच हैं और कितने नहीं।

शिवपुराण में कोरोना वायरस के जिक्र की सच्चाई

शिवपुराण में कोरोना वायरस और चीन में इसके पैदा होने के जिक्र का। सोशल मीडिया में इन दिनों एक तस्वीर वायरल हो रही है जिसे शिवपुराण की होने का दावा किया जा रहा है। इसमें जो मंत्र हैं उनमें जहां कोरोना वायरस के फैलने की बात है वहीं इससे बचाव के लिए भगवान शिव से प्रार्थना की गई है। साथ ही इसमें मांसाहार से वायरस के फैलने और चीन में इसके प्रसार का दावा है।

जब इसकी सच्चाई पर गौर किया गया तो मालूम हुआ कि शिवपुराण में ऐसे कोई दोहे हैं ही नहीं। यह असल में किसी व्यक्ति द्वारा संस्कृत में स्वरचित दोहे हैं जिनका शिवपुराण से कोई संबंध नहीं है। यह दोहे और तस्वीर लोगों के बीच भ्रम फैलाने के लिए तैयार किए गए हैं।

BRIGHT PUBLIC SCHOOL
J.C. Mallick Road, Hirapur
Dhanbad

शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं अभिभावकों को
स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक
शुभकामनाएँ

Dipak Kumar Sharma
Principal

कोरोना वायरस से भी खतरनाक थी डांसींग वायरस

हां आपने सही समझा डांसींग वायरस. यह बीमारी एक रहस्यमय बीमारी थी, जिसका आज तक पता भी नहीं चल पाया. जिस किसी को भी यह बीमारी होती थी वह नाचने लगता था. बीमार शख्स तबतक डांस करता रहता था, जबतक कि उसकी जान नहीं निकल जाती थी.

पूरी दुनिया में कोरोना वायरस इस समय का कहर बरपा रहा है यह शब्द जुबान पर आते ही लोगों के शरीर में सिहरन सी दौड़ जाती है इस समय दुनिया भर में कोरोना वायरस से संक्रमित कुल मरीजों की संख्या इतना इजाफा हुआ है जिसे कभी किसी ने अनुमान भी नहीं लगाया था। हजारो बल्कि लाखों लोगों ने कोरोना वायरस के संक्रमण से अपनी जान गवां चुके हैं. भारत में भी इस वायरस ने अपना असर दिखा दिया है। कोरोना वायरस का संक्रमण इतना खतरनाक है कि भारत सहित पूरी दुनिया के लोगों में इसकी दहशत फैल चुकी है.

लेकिन हम आज आपको एक ऐसी बीमारी के बारे में बताएंगे जो कि कोरोना वायरस के संक्रमण से भी ज्यादा खतरनाक थी. इस बीमारी से भी लगभग 400 से भी ज्यादा लोगों ने अपनी जान

गंवाई थी. यह बीमारी एक रहस्यमय बीमारी थी जिसका आज तक पता भी नहीं चल पाया. जिस किसी को भी यह बीमारी होती थी वह नाचने लगता था. बीमार शख्स तबतक डांस करता रहता था, जबतक कि उसकी जान नहीं निकल जाती थी. इस रहस्यमय बीमारी का पता आज भी वैज्ञानिक नहीं लगा पाए हैं. इस बीमारी के बारे में अभी तक कोई ऑफिशियल रिकॉर्ड तो नहीं है लेकिन इसके बारे में बताया जाता है कि यह बीमारी तकरीबन 16वीं शताब्दी के दौरान आई थी जिसे 'डांसिंग प्लेग' के नाम से जाना गया था. यह एक ऐसा डांस था जिसमें रोगी लगातार नाचता ही रहता था और वह तब तक खुद को नहीं रोक पाता था जबतक कि उसकी जान न निकल जाए.

यह एक ऐसा डांस था जिसे एक महिला ने शुरू किया था. यह महिला इतना मंत्रमुग्ध होकर डांस कर रही थी कि जो इसे देखता था वो भी इसके साथ नाचने लगता था. देखते ही देखते इस कतार में एक से बढ़कर कई लोग शामिल होने लगे, यह डांसिंग धीरे–धीरे एक भीड़ में तब्दील हो गई और ये लोग तबतक डांस करते रहे जब तक इन लोगों की जान नहीं निकल गई थी.

फ्राउ ट्रॉफी नाम की महिला हुई थी डांसिंग प्लेग का शिकार. घटना के मुताबिक एक दिन अचानक ही स्ट्रासबर्ग में रहने वाली सामान्य सी औरत 'फ्राउ ट्रॉफी' अपने घर से नाचते हुए बाहर आंगन में आ गई. हालांकि वहां पर आस–पास संगीत की कोई धुन नहीं बज रही थी, लेकिन फ्राउ ट्रॉफी अपनी ही धुन में मग्न थी और लगातार डांस किए जा रही थी. देखते ही देखती वो आंगन से निकलकर नाचते हुए वह सड़क पर आ गई. उसे देखने वालों का हुजूम जमा होने लगा. हर कोई उसे ही देख रहा था कोई उसे पागल कहता तो कोई कहता कि उसे दौरा आ गया है. कुछ लोग उसे देखकर हंस भी रहे थे. लेकिन, फ्राउ ट्रॉफी इन सब बातों से बेखबर बस लगातार नाचे ही जा रही थी.

उसके साथ ही कई लोगों ने भी डांस करना शुरू कर दिया, आपको बता दें कि डांस करने के दौरान ये लोग इतना ज्यादा लीन हो गए गए थे कि उन्हें इस बात की फिकर ही नहीं थी कि वो क्या कर रहे हैं और क्यों कर रहे हैं उन्हें और कुछ भी नहीं दिखाई दे रहा था. सुनने में लोगों को अजीब भले ही लग रहा हो लेकिन यह सच्चाई है कि लगभग 400 से भी ज्यादा लोग इस ग्रुप डांस में शामिल हुए और ये लोग तब तक डांस करते रहे जबतक कि उनकी जान नहीं निकल गई थी.

समस्त ग्राहकों को स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएँ

गौर मोहन मोदक
जनवितरण प्रणाली की दुकान

भारत माता के लाल

उनको सुबह तड़के साढ़े चार बजे बेड टी दी जाती है। उन्हें नौ बजे नाश्ता और शाम सात बजे रात का खाना भी मिलता है। चौबीस घंटे उनकी सेवा में भारतीय सेना के पाँच जवान लगे रहते हैं। उनका बिस्तर लगाया जाता है, उनके जूतों की बकायदा पॉलिश होती है और यूनिफॉर्म भी प्रेस की जाती है।

इतनी आरामतलब जिंदगी है बाबा जसवंत सिंह रावत की, लेकिन आपको यह जानकर अजीब लगेगा कि वे इस दुनिया में नहीं हैं। राइफल मैन जसवंत सिंह भारतीय सेना के सिपाही थे, जो 1962 में नूरारंग की लड़ाई में असाधारण वीरता दिखाते हुए मारे गए थे। उन्हें उनकी बहादुरी के लिए मरणोपरांत महावीर चक्र से सम्मानित किया गया था।

सेला टॉप के पास की सड़क के मोड़ पर वह अपनी लाइट मशीन गन के साथ तैनात थे, चीनियों ने उनकी चौकी पर बार-बार हमले किए लेकिन उन्होंने पीछे हटना कबूल नहीं किया।

वो मोर्चे पर लड़े और ऐसे लड़े कि दुनिया हैरान रह गई, इससे भी ज्यादा हैरानी आपको ये जानकर होगी कि 1962 वार में ही शहीद हुआ भारत माता का वो सपूत आज भी ड्यूटी पर तैनात हैं।

उनकी सेना की वर्दी हर रोज प्रेस होती है, हर रोज जूते पॉलिश किए जाते हैं। उनका खाना भी हर रोज भेजा जाता है और वो देश की सीमा की सुरक्षा आज भी करते हैं। सेना

के रजिस्टर में उनकी ड्यूटी आज भी होती है और उन्हें प्रमोशन भी मिलता है। अब वो कैप्टन बन चुके हैं। इनका नाम है कैप्टन जसवंत सिंह रावत। महावीर चक्र से सम्मानित फौजी जसवंत सिंह को आज बाबा जसवंत सिंह के नाम से जाना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि अरुणाचल प्रदेश के तवांग जिले के जिस इलाके में जसवंत ने जंग लड़ी थी उस जगह वो आज भी ड्यूटी करते हैं और भूत प्रेत में यकीन न रखने वाली सेना और सरकार भी उनकी मौजूदगी को चुनौती देने का दम नहीं रखते। बाबा जसवंत सिंह का ये रुतबा सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि सीमा के उस पार चीन में भी है।

उनके परिवार वाले जब जरूरत होती है, उनकी तरफ से छुट्टी की दर्खास्त देते हैं। जब छुट्टी मंजूर हो जाती है तो सेना के जवान उनके चित्र को पूरे सैनिक सम्मान के साथ उनके उत्तराखंड के पुश्तैनी गाँव ले जाते हैं और जब उनकी छुट्टी समाप्त हो जाती है तो उस चित्र को ससम्मान वापस उनके असली स्थान पर ले जाया जाता है।

अरुणाचल प्रदेश के तवांग जिले में नूरांग में बाबा जसवंत सिंह ने वो ऐतिहासिक जंग लड़ी थी। वो 1962 की जंग का आखिरी दौर था। चीनी सेना हर मोर्चे पर हावी हो रही थी। लिहाजा भारतीय सेना ने नूरांग में तैनात गढ़वाल यूनिट की चौथी बटालियन को वापस बुलाने को आदेश दे दिया। पूरी बटालियन लौट गई, लेकिन जसवंत सिह, लांस नायक त्रिलोक सिंह नेगी और गोपाल सिंह गुसाई नहीं लौटे। बाबा जसवंत ने पहले त्रिलोक और गोपाल सिंह के साथ और फिर दो स्थानीय लड़कियों की मदद से चीनियों के साथ मोर्चा लेने की रणनीति तैयार की। बाबा जसवंत सिंह ने अलग-अलग जगह पर राईफल तैनात की और इस अंदाज में फायरिंग करते गए मानों उनके साथ बहुत सारे सैनिक वहाँ तैनात हैं। उनके साथ केवल दो स्थानीय लड़कियाँ थीं, जिनके नाम थे, सेला और नूरा।

चीनी परेशान हो गए और तीन दिन यानी 72 घंटे तक वो ये नहीं समझ पाए कि उनके साथ अकेले जसवंत सिंह मोर्चा लड़ा रहे हैं। तीन दिन बाद जसवंत सिंह को हथियार एवं जरूरी सामानों की आपूर्ति करने वाली नूरा को चीनियों ने पकड़ लिया। इसके बाद उनकी मदद कर रही दूसरी लड़की सेला पर चीनियों ने ग्रेनेड से हमला किया और वह शहीद हो गई, लेकिन वो जसवंत तक फिर भी नहीं पहुँच पाए। बाबा जसवंत ने खुद को गोली मार ली। भारत माता का ये लाल नूरांग में शहीद हो गया।

चीनी सैनिकों को जब पता चला कि उनके साथ तीन दिन से अकेले जसवंत सिंह लड़ रहे थे तो वे हैरान रह गए। चीनी सैनिक उनका सिर काटकर अपने देश ले गए। 20 अक्टूबर 1962 को संघर्ष विराम की घोषणा हुई। चीनी कमांडर ने जसवंत की बहादुरी का लोहा माना और सम्मान स्वरूप न केवल उनका कटा हुआ सिर वापस लौटाया बल्कि कांसे की मूर्ति भी भेंट की।

जिस जगह पर बाबा जसवंत ने चीनियों के दांत खट्टे किए थे उस जगह पर एक मंदिर

बना दिया गया है। इस मंदिर में चीन की ओर से दी गई कांसे की वो मूर्ति भी लगी है। उधर से गुजरने वाला हर जनरल और जवान वहां सिर झुकाने के बाद ही आगे बढ़ता है। स्थानीय नागरिक और नूरांग फॉल जाने वाले पर्यटक भी बाबा से आशीर्वाद लेने के लिए जाते हैं। वो जानते हैं बाबा वहाँ हैं और देश की सीमा की सुरक्षा कर रहे हैं। वो जानते हैं बाबा शहीद हो चुके हैं, वो जानते हैं बाबा जिंदा हैं, बाबा अमर हैं।

जसवंत सिंह लोहे की चादरों से बने जिन कमरों में रहा करते थे, उसे स्मारक का मुख्य केंद्र बनाया गया। इस कमरे में आज भी रात के वक्त उनके कपड़े को प्रेस करके और जूतों को पोलिश करके रखा जाता है।

जसवंत सिंह की शहादत से जुड़ी कुछ किंवदंतियाँ भी हैं। इसी में एक है कि जब रात को उनके कपड़ों और जूतों को रखा जाता था और लोग जब सुबह उसे देखते थे तो ऐसा प्रतीत होता था कि किसी व्यक्ति ने उन पोशाकों और जूतों का इस्तेमाल किया है।

कुलदीप सिंह बताते हैं कि इस पोस्ट पर तैनात किसी सैनिक को जब झपकी आती है तो कोई उन्हें यह कहकर थप्पड़ मारता है कि जगे रहो, सीमाओं की सुरक्षा तुम्हारे हाथों में है।

इतना ही नहीं, एक किंवदंती यह भी है कि उस राह से गुजरने वाला कोई राहगीर उनकी शहादत स्थली पर बगैर नमन किए आगे बढ़ता है तो उसे कोई न कोई नुकसान जरूर होता है। हर ड्राइवर अपनी यात्रा को सुरक्षित बनाने के लिए जसवंतगढ़ में जरूर रुकता है।

जसवंत सिंह के इस युद्ध स्मारक की देखरेख 10वें सिख रेजीमेंट के हाथों में है। यहाँ आने वाले हर व्यक्ति के लिए यह रेजीमेंट खाना चाय और लंगर की व्यवस्था करता है। यह जसवंत सिंह की शहादत है जिसे ध्यान में रखकर चाय की पहली प्याली, नाश्ते का हर पहला प्लेट और भोजन की सारी व्यवस्था का पहला भोग जसवंत सिंह को ही लगाया जाता है।

यह जसवंत सिंह की वीरता ही थी कि भारत सरकार ने उनकी शहादत के बाद भी सेवानिवृति की उम्र तक उन्हें उसी प्रकार से पदोन्नति दी, जैसा उन्हें जीवित होने पर दी जाती थी। भारतीय सेना में अपने आप में यह मिसाल है कि शहीद होने के बाद भी उन्हें समयवार पदोन्नति दी जाती रही। मतलब वह सिपाही के रूप में सेना से जुड़े और सूबेदार के पद पर रहते हुए शहीद हुए।

नूरानांग के इस युद्ध के दौरान शैला और नूरा नाम की दो लड़कियों की शहादत को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। जसवंत सिंह जब युद्ध में अकेले डटे थे तो इन्हीं दोनों ने शस्त्र और असलहे उन्हें उपलब्ध कराए। जो भारतीय सैनिक शहीद होते उनके हथियारों को वह लाती और जसवंत सिंह को समर्पित करती और इन्हीं हथियारों से जसवंत सिंह ने लगातार 72 घंटे चीनी सैनिकों को अपने पास भी फटकने नहीं दिया और अंततः वह भारत माता की गोद में लिपट गए और इतिहास में अपने नाम स्वर्णाक्षरों में लिखवा लिया।

सुशांत सिंह राजपूत जीवनी

सुशांत सिंह राजपूत हिन्दी फिल्मों में अभिनेता होने के साथ साथ थियेटर और टीवी अभिनेता भी थे। टीवी सीरीयल 'पवित्र रिश्ता' में काम कर चुके राजपूत को इस सीरीयल की बदौलत काफी लोकप्रियता मिली थी। सुशांत ने फिल्म 'काई पोचे' से अपने फिल्मी करियर की शुरुवात की, जिसके बाद उन्हें एक स्टार के रूप सभी दर्शकों ने अपना लिया।

पृष्ठभूमि–

सुशांत सिंह राजपूत का जन्म पटना, बिहार में हुआ है। उनके पिता सरकारी अधिकारी हैं। उनका परिवार सन् 2000 के शुरूआती समय में दिल्ली में बस गया। सुशांत की 4 बहनें भी हैं जिसमें से एक मीतू सिंह राज्य स्तर की क्रिकेट खिलाड़ी हैं।

सुशांत सिंह राजपूत की अनसुनी बातें

शिक्षा–

राजपूत की शुरूआती पढ़ाई सेंट कैरेंस हाई स्कूल, पटना से हुई है और इसके आगे की पढ़ाई दिल्ली के कुलाची हंसराज मॉडल स्कूल से हुई है। इसके बाद दिल्ली कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग से उन्होंने मैकेनिल इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी की।

करियर–

सुशांत के करियर की शुरूआत बैकअप डांसर के रूप में हुई थी और उन्होंने फिल्मफेयर अवार्ड्स में भी कई बार डांस किया है। वहीं पर उनको सबसे पहले बालाजी टेलीफिल्मस की कास्टिंग टीम ने नोटिस किया जिसके बाद उनके करियर की शुरूआत 'किस देश में है मेरा दिल' नामक सीरियल से हुई जिसमें उन्होंने प्रीत जुनेजा का किरदार निभाया था लेकिन जी.टी.वी. का शो 'पवित्र रिश्ता' उनके करियर के लिए मील का पत्थर साबित हुआ। इसके बाद वे डांस रियलिटी शो 'जरा नच के दिखा 2 और झलक दिखला जा 4 में भी दिखाई दिए और इसके बाद सुशांत ने फिल्मों का रूख कर लिया और 'काय पो चे' फिल्म से अपना फिल्मी सफर शुरू किया।

प्रसिद्ध फिल्में–

कायपोचे
शुद्ध देसी रोमांस
एमएस धोनी
पीके,
केदारनाथ और
छिछोरे

आपको बता दे सुशांत की आखरी फिल्म दिल बेचारा है, जिसमे उनके साथ संजना सांघी नजर आयी है। ये फिल्म 24 जुलाई 2020 को डिजिटल प्लेटफार्म पर रिलीज हुई है।

बॉलीवुड अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत ने मुंबई में 14 जून को अपने घर में फांसी लगाकर जान दे दी थी। उनके नौकर ने उनके शव को पंखे से लटकते हुए देखा और पुलिस को इसकी जानकारी दी थी। मुंबई पुलिस जांच के लिए उनके घर पहुंची थी लेकिन इससे जुड़ी ज्यादा जानकारी बाहर नहीं आई है। बता दें, सुशांत सिंह राजपूत महज 34 वर्ष के थे। टेलीविजन की दुनिया में 'पवित्र रिश्ता' के साथ घर घर में नाम कमाने के बाद साल 2013 में सुशांत ने बॉलीवुड फिल्मों में एंट्री ली। सुशांत को हमेशा फैंस का प्यार मिला था। ऐसे में यह हादसा दिल दहलाने वाला था।

सुशांत के निधन का कारण आत्महत्या को बताया जा रहा है और मुंबई पुलिस आत्महत्या की वजह की जांच कर रही है। आपको बता दे, के उनके प्रशंसक लगातार सीबीआई जांच की मांग कर रहें है क्योंकि उनके अनुसार सुशांत कि किसी साजिश के तहत हत्या की गयी है।

16 जुलाई को सुशांत की गर्लफ्रेंड 'रिया चक्रबर्ती' ने

खुद को सुशांत की गर्लफ्रेंड के रूप में इंट्रोड्यूस करते हुए गृह मंत्री अमित शाह से सीबीआई जांच की मांग की थी लेकिन महाराष्ट्र के गृह मंत्री अनिल देशमुख ने इस मांग को खारिज करते हुए कहा की मुंबई पुलिस इस केस की अच्छी तरह जांच करने में समर्थ है, लेकिन 5 अगस्त 2020 केंद्र सरकार से मंजूरी मिलने के बाद, सुप्रीम कोर्ट ने सुशांत केस में सीबीआई जांच की अनुमति दे दी है।

रिया ने सुप्रीम कोर्ट से अंतरिम सुरक्षा की मांग की थी लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने इस मांग को खारिज कर दिया है। 25 जुलाई को सुशांत के पिता ने सुशांत की गर्लफ्रेंड रिया चक्रबर्ती उनके परिवार समेत 5 लोगों पर गंभीर आरोप लगाते हुए पटना पुलिस के पास एफआईआर दर्ज कराई है, आपको बता दें ये आरोप धोखाधड़ी, चोरी, गलत तरीका अपनाना, आपराधिक विश्वासघात और सुशांत के पैसे हड़पने से संबधित है।

सुशांत को उनकी फिल्मों के लिए नवाजे गये अवार्ड और पुरस्कार। सुशांत से जुड़े कुछ तथ्य जो शायद ही आप जानते होगें–

1. सुशांत पढ़ाई में काफी अव्वल थे, इस वजह से वे कई परीक्षाओं में बैठे और सफल हुए लेकिन उन्हें तो अपना करियर फिल्मों में बनाना था इसलिए वे पहले दिल्ली आए और इसके बाद मुंबई का रूख किया।

2. सुशांत मशहूर कोरियोग्राफर श्यामक डावर के छात्र रहे हैं। सुशांत ने 2006 के कॉमनवेल्थ खेलों में भी परफॉर्म किया था। इसके बाद 51वें फिल्मफेयर अवार्डस में भी वे बैकग्राउंड डासंर के तौर पर काम कर चुके हैं।

3. मुंबई आने के बाद उन्होंने एक डांस ग्रुप के साथ भी परफॉर्म किया जिसको मशहूर कोरियोग्राफर ऐश्ले लोबो ने प्रशिक्षित किया था। इसके बाद उन्होंने थियेटर ज्वाइन किया और शायद यही कारण है कि वे एक मेहनती अभिनेता बनने में सफल हुए।

4. उन्होंने मशहूर एक्शन डायरेक्टर अलन अमीन से मार्शल आर्ट्स के गुर भी सीखे हैं।

5. मशहूर टी.वी सीरियल पवित्र रिश्ता से पहले वे 'किस देश में है मेरा दिल' नामक सीरियल में काम कर चुके हैं।

6. पवित्र रिश्ता में निभाए गए अपने किरदार मानव देशमुख से वे घर–घर की पसंद बन गए।

7. वे 'जरा नच के दिखा 2' और 'झलक दिखला जा 4' जैसे बड़े डांसिग शोज के भी प्रतिभागी रहे हैं और 'झलक दिखला जा 4' के दौरान उन्हें 'मोस्ट कंसिस्टेंट परफॉर्मर' का टाईटल भी मिल चुका है।

8. अपनी पहली ही फिल्म से सबकी नजर में अपनी जगह बनाने वाले सुशांत का भी जीवन आसान नहीं रहा है। मां बाप की इच्छा के बिना उन्होंने फिल्मों को अपना करियर चुना और आज इंडस्ट्री में अपना एक अलग मुकाम स्थापित किया है।

9. फिल्म 'काय पे चे' में निभाए गए अपने किरदार की प्रेरणा उन्हें अपनी बहन मीतू सिंह से मिली थी। मीतू सिंह राज्य स्तर की किक्रेट खिलाड़ी हैं।

10. एक समय था जब उनके साथ अभिनेत्रियां काम तक नहीं करना चाहती थीं क्योंकि वे एक साधारण परिवार से थे और उनका कोई फिल्मी बैकग्राउंड नहीं था। फिल्म 'शुद्ध देसी रोमांस' इसका उदाहरण है। काफी समय बाद फिल्म के लिए परिणीति चोपड़ा को साइन किया गया था।

11. वे अपनी लव लाइफ को लेकर भी अखबारों और टी. वी. की सुर्खियों में रहे हैं। वे अपनी प्रेमिका अंकिता लोखंडे के साथ काफी लंबे वक्त से रिलेशन में हैं और खबरों की मानें तो वे एक साथ लिव–इन में रहते हैं।

12. दोनों लव बर्ड्स की मुलाकात पहली बार 'पवित्र रिश्ता' के सेट पर ही हुई थी और वहीं से दोनों के बीच प्यार पनपना शुरू हो गया था।

13. ऐसा कहा जाता है कि दोनों के बीच ऐसा गहरा रिश्ता है कि अगर किसी भी फिल्म में सुशांत का किसिंग सीन होता है तो सुशांत यह बात पहले ही अंकिता को बता देते हैं और उनकी हामी होने के बाद ही वे ऐसे सीन को अंजाम देते हैं।

14. अपनी आने वाली फिल्म 'डिटेक्टिव ब्योमकेश बक्शी' को लेकर वे खासा सुर्खियों में हैं। फिल्म के फर्स्ट लुक और ट्रेलर ने पहले से ही बाजार में धूम मचा रखी है और दर्शक सुशांत को इस किरदार में देखकर बेहद खुश हैं।

15. डायरेक्टर दिबाकर बैनर्जी के अनुसार ब्योमकेश बक्शी के किरदार के लिए उनकी पहली पसंद सुशांत सिंह ही थे।

16. ऐसा कहा जा रहा है कि फिल्म में उनके और अभिनेत्री स्वास्तिका मुखर्जी के बीच एक लंबा किसिंग सीन फिल्माया गया है जो कि रणवीर सिंह और दीपिका पादुकोण के फिल्माए गए 'रामलीला' के सीन से भी लंबा है।

17. उन्होंने भारतीय किक्रेटर एम एस धोनी पर बनी बायोपिक में भी उनका किरदार निभाया है।

कोयला खान भविष्य निधि आयुक्त का कार्यालय

मुख्यालय, धनबाद

कोयला मंत्रालय के अधीन एक सांविधिक निकाय

पुलिस लाईन एच.पी.ओ., धनबाद–826014 (झारखण्ड)

OFFICE OF THE COMMISSIONER COAL MINES PROVIDENT FUND ORGANISATION.
HEADQUARTERS, DHANBAD
(A STATUTORY ORGANISATION UNDER MINISTRY OF COAL, GOVERNMENT OF INDIA)
POLICE LINE, H.P.O-DHANBAD-826014 (JHARKHAND)

शुभ–कामना संदेश

कोयला खान भविष्य निधि संगठन के सभी सदस्यों, पेन्शनधारियों को
कोयला खान भविष्य निधि
संगठन के आयुक्त एवं समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों
की ओर से स्वतंत्रता दिवस 2020 की हार्दिक
शुभकामनाएँ।

अनन्त सोच परिवार की ओर से
समस्त देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस
2020 की हार्दिक बधाई

राष्ट्रीयता के प्रहरी

हरिद्वार पाठक
क्षेत्रीय आयुक्त
कोयला खान भविष्य निधि संगठन
आसनसोल

3 अगस्त को राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की जयन्ती पड़ती है। जयन्ती के बहाने ही सही स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर राष्ट्रकवि को श्रद्धांजलि देना हमारा परम कर्त्तव्य है। गुप्त जी का जन्म 3 अगस्त, 1886 को झांसी के पस चिरगांव में हुआ था। इनके माता–पिता वैष्णव थे। अतः इनका भी संस्कार कुछ वैसा ही था। इनकी औपचारिक शिक्षा बहुत कम हुई थी, किन्तु इन्होंने घर में ही हिन्दी, बंगला और संस्कृत का अच्छा अध्ययन किया था। वे 12 वर्ष की अवस्था से ही ब्रजभाषा में कविता लिखने लगे थे। बाद में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के संपर्क में आने पर ये हिन्दी में काव्यरचना करने लगे तथा इनकी रचनाएं सरस्वती में प्रकाशित होने लगीं। राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत ''भारत भारती'' का प्रकाशन 1912–13 में हुआ। इसके बाद वे महात्मा गांधी के सम्पर्क में आए और गांधी जी ने इन्हें राष्ट्रकवि की संज्ञा प्रदान किया। इस बीच इन्होंने 'साकेत' महाकाव्य की रचना की तथा संस्कृत के प्रसिद्ध नाट्य ग्रंथ ''स्वपन्वासवदन्ता'' का हिन्दी अनुवाद किया। 1941 में वे जेल भी गए। उन्हें आगरा विश्वविद्यालय से डी0लिट् की उपाधि तथा भारत सरकार द्वारा पद्मविभूषण की उपाधि भी प्रदान की गई। 1952 से 1964 तक वे राज्य सभा के सदस्य भी रहे। 12 दिसंबर, 1964 को अपने देहान्त से पूर्व इन्होंने दो महाकाव्य, उन्नीस खंडकाव्य, अनेक कविताएं, काव्यगीत, निबन्ध, नाटक, नाटिकाएं आदि की रचना की तथा बंगला एवं संस्कृत के कई काव्यग्रंथों का हिन्दी में अनुवाद भी किया।

प्राचीन समय में राष्ट्रीयता का स्वरूप बहुत कुछ सांस्कृतिक रहा है। हमारे ऋषिगण अपनी जन्मभूमि को माता के समान मानते थे।

माता भमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः । अथवा जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी। इत्यादि प्राचीन वाक्यों में जन्मभूमि की महिमा गाई गई है और इसे स्वर्ग से भी श्रेष्ठ बताया गया है। यदि हम हिन्दी के आदिकालीन साहित्य पर दृष्टिपात करते हैं तो वहां वीरता एवं वीर रस से संबंधित अनेक रचनाएं दिखाई देती हैं। लेकिन वे किसी एक वीर पृथ्वीराज, छत्रसाल या शिवाजी के प्रशस्तिगान में रची गई है।। वस्तुतः उस समय के कवि राज्याश्रित होते थे और अपने आश्रयदाता का प्रशस्तिगान करते थे। लेकिन आज हम जिस राष्ट्रीय भावना या राष्ट्रवाद की चर्चा कर रहे हैं, हमारे देश में 1857 की क्रांति के बाद ही इसका प्रादुर्भाव दिखाई पड़ता है।

भारत में राष्ट्रीय चेतना का आरंभ 19वीं सदी के नवजागरण से हुआ है। प्रारंभ में यह चेतना सांस्कृतिक आंदोलन के रूप में प्रस्फुटित हुई। राजा राममोहन राय, केशवचंद सेन, स्वामी विवेकानंद, दयानन्द आदि इस सांस्कृतिक जागरण के अग्रदूत थे जो समाज को अंधकार से निकालकर प्रकाश पथ की ओर अग्रसर कर रहे थे। राजनीतिक राष्ट्रवाद भी इनके अभियान का एक अंग था, जो बाद में तीव्रतर होकर देश की आजादी की लड़ाई के साथ मिलकर प्रखर हो उठा। गांधी और तिलक यही संघर्ष कर रहे थे जो राजनीतिक रूप से राष्ट्रवादी, जनोन्मुखी और असंप्रदायिक थे।

आधुनिक हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय भावना की प्रथम अभिव्यक्ति भारतेन्दु की रचनाओं में दिखाई देती है। इन्होंने ही सर्वप्रथम दरबारी और रीति के बन्धनों को तोड़कर जनमानस में राष्ट्रप्रेम जगाने की कोशिश की। इन्होंने परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ी हुई भारतमाता की दुर्दशा के चित्र खींचते हुए देशवासियों में राष्ट्रीयता का भाव जगाया।

''आवहु सब मिलि के रोवहु भारत भाई,
हा-हा भारत दुर्दशा न देखी जाई।''

भारतेन्दु द्वारा आरंभ किए गए राष्ट्रवाद को बादके कवियों और साहित्यकारों ने बखूबी आगे बढ़ाया। श्रीधर पाठक , मैथिलीशरण गुप्त, सियारामशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी, माखनलाल चतुर्वेदी, जयशंकर प्रसाद , निराला, दिनकर आदि कवियों ने राष्ट्रीय चेतना को जनमानस में सफलता पूर्वक प्रवाहित किया।

'भारत भारती' मैथिलीशरण गुप्त की प्रारंभिक रचनाओं में प्रमुख है। यही रचना गुप्तजी को भारतीय संस्कृति का प्रवक्ता तथा राष्ट्रकवि बनाती है। इसमें भारत की पूर्व दशा का चित्रण करते हुए वर्त्तमान के

कर्त्तव्य तथा भविष्य के लोकतंत्र का चित्र भी दिखाया गया है। उन्होंने भारत के गौरवपूर्ण अतीत का स्मरण कराते हुए राष्ट्र का गौरव गान किया है।

''भू लोक का गौरव प्रकृति का पुण्य लीलास्थल कहां? फैला मनोरम गिरि हिमालय और गंगाजल जहां। सम्पूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है? उसका कि जो ऋषिभूमि है, वह कौन भारतवर्ष है। गुप्तजी प्राचीन विरासत के गौरवगान के माध्यम से पराधीनता की पीड़ा से त्रस्त भारतीय जनमानस में अपने प्राचीन आदर्शों के प्रति एक सजग, सचेत कौतुहल एवं आकर्षण उत्पन्न करना चाहते थे, जिससे उनकी चेतना आंदोलित हो सके। उनका मानना था कि विदेशियों के आगमन से पहले भारत की स्थिति अत्यन्त उत्कृष्ट थी। लेकिन हमारे पारस्परिक वैमनस्य और फूट के कारण विदेशियों को यहां पैर जमाने का मौका मिला। अंग्रेजी शासन–व्यवस्था पर सवाल उठाने से पहले वे देशवासियों को ही दोष देते हैं–

''हां, आर्य संतति आज कैसी अंध और असक्त है।
पानी हुआ क्या हमारी नाड़ियों में रक्त है?
संसार में हमने किया बस एक ही काम है
निज पूर्वजों का सब तरह हमने डुबोया नाम है।''

राष्ट्रकवि का ध्यान कृषि की अवनति, किसानों के शोषण और अंग्रेजी व्यापार नीति जिसके माध्यम से भारत का धन लंदन जा रहा था, पर जाता है। वे अपने समय में भारत की बुरी अवस्था का व्यापक चित्रण करते हुए इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि भूख और गरीबी पर विजय पाये बिना देश को आगे नहीं बढ़ाया जा सकता है। इन्होंने अकाल का सटीक चित्र प्रस्तुत करते हुए अंग्रेजी राज व्यवस्था की अमानवीय नीति पर प्रकाश डाला है। वे भारत की इस नीति पर प्रकाश डाला है। वे भारत की इस स्थिति के लिये अत्यन्त चिंतित हैं।

''भारत कहो तो आज तुम क्या हो वही भारत अहो,
हे पुण्य भूमि, कहां गई है वह तुम्हारी श्री कहो,

कब कमला क्या जल तक नहीं सरमध्य केवल पंक है वह राज–राज कुबेर अब हाँ रंक का भी रंक है।''

अंग्रेजों के शोषण और दमन के कारण भारतीय जनता त्राहि–त्राहि कर रही थी। जिस भारत को प्राचीनकाल में सोने की चिड़िया कहा जाता था, वही अब कंगाल हो चुका था। अपने गौरवशाली अतीत को याद करते हुए राष्ट्रकवि भारतवासियों को जागृत करते हैं।

''हम कौन थे क्या हो गए और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्याएं सभी।।

वस्तुतः भारत भारती के माध्यम से गुप्तजी ने देश के जनमानस को अंग्रेजी सत्ता के खिलाफ खड़ा करने का प्रयास किया। इसमें वे सफल भी हुए। यही कारण है कि भारत भारती तत्कालीन भारतीय समाज में स्वतंत्रता का परिचायक बन गई थी और लोग इसे स्वतंत्रता संग्राम का घोषणा पत्र मानने लगे थे। देश का हर देशभक्त निम्नलिखित पंक्तियों को गुनगुना रहा था।

''भागो अलग अविचार से त्यागो कुसंग कुरीति का
आगे बढ़ो निर्भीकता से काम क्या है भीति का।

इसी प्रकार निम्नलिखित पंक्तियां भी राष्ट्रभक्तों के साथ ही आमजनों में भी लोकप्रिय हो रही थीं।

''अनुकूल अवसर पर दयामय फिर दया दिखलाएंगे।
वे दिन यहां फिर आएंगे, फिर आएंगे, फिर आएंगे।।

वैसे तो 'भारत भारती' में राष्ट्रीय चेतना का प्रबल प्रवाह दिखाई पड़ता है, लेकिन इसके साथ ही गुप्तजी की अन्य रचनाओं में भी व्यापक राष्ट्रभक्ति और स्वतंत्रता के स्वर दिखाई पड़ते हैं। साकेत, जय भारत, जयद्रथ वध, वैतालिक, स्वदेश संगीत, पंचवटी, प्रदक्षिणा आदि कृतियों में भी राष्ट्रीय चेतना समग्रता से दिखाई देती है। 'साकेत' में राष्ट्रकवि ने बताया है कि मातृभूमि की रक्षा करना देशवासियों का कर्त्तव्य होता है। गुप्तजी लक्ष्मणके माध्यम से उस समय को विवेचित करते हुए अंग्रेजों को राक्षस बता रहे हैं तथा दासता से मुक्ति के लिए देशवासियों की व्याकुलता को संकेतित करते हैं–

''भारत लक्ष्मी पड़ी राक्षसों के बंधन में,
सिंधु पार बिलखती व्याकुल मान में।''

गुप्तजी राम जैसे अलौकिक चरित्र को भी लौकिक धरातल पर उतारकर आदर्श लोकतंत्र की स्थापना करना चाहते थे। वे राम के रूप में एक ऐसे राजा की कामना करते हैं जो लोकमत से तो चुना गया हो ही, वह लोकहित के कार्य भी करे–

राजा हमने राम तुम्हीं को है चुना,
करो न यूं हाय, लोकमत अनसुना।

आज के समय में जब हमारा शासकवर्ग वोट के लिए कुछ भी करने को तैयार हैं, ऐसे समय में हमें

गुप्तजी के आदर्श राज्य और आदर्श राजा की और भी आवश्यकता है। गुप्तजी का मानना है कि जो व्यक्ति अपने स्वार्थ को त्यागकर राष्ट्रहित की बात करता है, वही आज का नेता होने के योग्य है। तभी तो वे विष्णुप्रिया में कहते हैं–

'औरों के लिए वे गए, अपने लिए नहीं,
तारणीय वे हैं जो पड़े हैं मझधार में।

गुप्तजी का राष्ट्रवाद गांधीवाद से भी प्रभावित रहा है। अहिंसा का महत्व स्वीकार करते हुए गुप्तजी ने 'यशोधरा' में राहुल के मुख से कितने सुन्दर शब्दों में आदर्श उपस्थित कराया है–

"कोई निरपराध को मारे,
तो क्या अन्य न उसे उबारे,
रक्षक पर भक्षक को वारे,
न्याय दया का दानी,
माँ कह एक कहानी।"

गाँधीजी ने चरखा चलाकर सूत बुनने और शरीर ढकने का संदेश, स्वदेशी वस्त्र पहनने का सिद्धान्त भारतीय निर्धन जनता को दिय, जिससे कि थोड़े व्यय में उनका खर्च चल जाए, लोगों में स्वावलंबन की भावना बढ़े और साथ ही देश में बेकारी की समस्या का हल भी हो जाए। गुप्तजी ने यही बात 'साकेत' में सीता के मुख से कोल, किरात और भीलों की महिलाओं के प्रति कहलवाया है–

"तुम अर्द्धनग्न क्यों रहो अशेष समय में,
आओ हम कातें बुनें काम की लय में।'

वस्तुतः गुप्तजी की राष्ट्रीय चेतना संकीर्ण मतवाद, स्वार्थ प्रवृत्ति, सांप्रदायिक विद्वेष तथा ऊँच–नीच के खोखले भेदभावों का विरोध करती हुई, सर्वे भवन्तु सुखिनः के आदर्श को अपनाती हुई मानवतावाद की स्थापना करनेवाली है, जो उनकी राष्ट्रीय चेतना की सबसे बड़ी विशेषता है। उन्होंने अपने रचनाओं के माध्यम से स्वच्छ राजनैतिक वातावरण, समष्टि हित, साम्प्रदायिक एकता, नारी उत्थान, किसान–अभ्युदय, गांधीवाद, सत्य, अहिंसा आदि भावनाओं को स्वर देते हुए देशवासियों में देशभक्ति का भाव जगाकर उनमें राष्ट्रीय चेतना का संचार करने का महान कार्य किया है। राष्ट्रीय चेतना का संचार करने का महान कार्य किया है। राष्ट्रीय चेतना उनके साहित्य की आत्मा है तथा राष्ट्रीयता के संवाहक एवं राष्ट्रप्रहरी के रूप में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त सदैव अमर है।

INDUSTRIES AND COMMERCE ASSOCIATION

I.C.O. ASSOCIATION ROAD (Shakti Mandir Path)
DHANBAD-826001

(Established in the year 1933 to promote and protect the mining or any other industry, trade and commerce in India)
Jharkhand's premier and pioneer trade body of industries and forum of young entrepreneurs

87 years in the service of the Nation

Best possible utilization of lower grade of coking coal by providing cleaner and more efficient fuel/energy.

Serving the needs of hard coke to the secondary steel sector and various other industries of strategic importance.

Giving direct employment to almost 40,000 poor workers, mostly belonging to the weaker section of the society, besides about 60,000 people engaged indirectly, by way of transportation, marketing etc.

Promotes entrepreneurship and aims at the development and growth of the industry in the region.

Assists in maintaining healthy labour management relationship.

Helps in the redressal of grievances of public in general and industries in particular

Domestic hard coke industry in Jharkhand needs some better variety of coking coal having better caking index and low ash content to use as sweetener to feed secondary steel sector, chemical plants, ferrous and non-ferrous metal industries all over the country, to compete with those who are producing hard coke out of imported coal, to save scarce foreign exchange.

समूह - संस्थापकः पूज्यपाद अघोरेश्वर भगवान राम जी की

अन्तिम वाणी

रमता है सो कौन, घट - घट में विराजत है।
रमता है सो कौन, बता दे कोई?

मैं अघोरेश्वर स्वरूप ही स्वतन्त्र,
सर्वत्र, सर्वकाल में स्वच्छंद रमण करता हूँ।
मैं अघोरेश्वर ही सूर्य की किरणों, चन्द्रमा की रश्मियों,
वायु के कणों और जल की हर बूंदों में व्याप्त हूँ।
मैं अघोरेश्वर ही पृथ्वी के प्राणियों, वृक्षों,
लताओं, पुष्पों और वनस्पतियों में विद्यमान हूँ।
मैं अघोरेश्वर ही पृथ्वी और आकाश के बीच जो खाली है,
उसके कण-कण में, तृषरेणुओं में व्याप्त हूँ।
साकार भी हूँ, निराकार भी हूँ। प्रकाश में हूँ और अन्धकार में भी मैं ही हूँ।
सुख में हूँ और दुःख में भी मैं ही हूँ। आशा में हूँ और निराशा में भी मैं ही हूँ।
भूत में, वर्तमान में और भविष्य में एक साथ ही विचरनेवाला मैं ही हूँ।
मैं ज्ञात भी हूँ और अज्ञात भी। स्वतन्त्र भी हूँ और परतन्त्र भी।
आप जिस रूप में अपनी श्रद्धा-सहेली को साथ लेकर ढूंढेंगे,
मैं उसी रूप में आपको मिलूंगा।

सत्यम्। सत्यम्। सत्यम्।

सीएसआईआर – केन्द्रीय खनन एवं ईंधन अनुसंधान संस्थान, धनबाद

(विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली के अंतर्गत सीएसआईआर की एक अंगीभूत प्रयोगशाला)

CSIR-CIMFR has been formed with the Vision "to be an internationally acclaimed mining and fuel research organisation".

Major Contributions of CSIR-CIMFR are:

- Development of Safe Methods and Assessment of stability of Mine Workings
- Design of Safe Blasting Patterns of Mines & Civil structures
- Design of Stowing Systems for Stabilization of Mine Workings
- Assessment of Subsidence and Ground Movement due to Mining
- Design of Environmental Management Plan for Mining and washery

- Coal Quality Assessment
- Basic Studies on Coal Science
- Coal Preparation
- Coal Liquefaction Direct and Indirect routes
- Coal Gasification
- Coal Combustion & Coal Carbonization
- Non Fuel Uses of Coal/ Value Added Chemicals

CSIR-CIMFR also extends testing, evaluation, calibration and consultancy services for explosives and accessories, mining and related activities, flameproof and intrinsically safe equipment, electrical cables, wire ropes, cage and suspension gear components, aerial ropeways, etc., for their safe use.

For Further Information Please Contact:
Dr. Pradeep K Singh
Director
CSIR-Central Institute of Mining & Fuel Research
Barwa Road, Dhanbad 826 015 (Jharkhand)
Phone : 91-326-2296023/ 2296006/ 2381111
Fax : 91-326-2296025/2381113
E-mail : director@cimfr.nic.in/ drpksingh@cimfr.nic.in

देश भर के साधु संतों की संस्थाओं में श्री सर्वेश्वरी समूह ने २० टन राशन वितरित कर बनाया कीर्तिमान

कोरोना महामारी में अघोरेश्वर का प्रसाद बना गरीबों के लिए वरदान

- ओम प्रकाश शुक्ला

कोरोना के इस महामारी में श्री सर्वेश्वरी समूह देवस्थानम , पड़ाव आश्रम गरीब असहाय एवं अपनी आजीविका चलाने में असमर्थ लोगों के लिए महान संत अघोरेश्वर भगवान राम का दरबार जहां वरदान साबित हुआ वहीं मानवता की सेवा के लिये इस संस्था द्वारा लगभग दो महिने तक पड़ाव, वाराणसी स्थित प्रधान कार्यालय से लेकर देश भर में फैले शाखा कार्यालयों द्वारा बड़े पैमाने पर जरूरतमंदों के बीच प्रसाद के रूप में राशन का वितरण कर अघोरेश्वर का प्रसाद एक बड़ा कीर्तिमान स्थापित किया है।

मालूम हो कि अघोर पीठ श्री सर्वेश्वरी समूह संस्थान देवस्थानम ,कुष्ठ सेवा आश्रम पड़ाव वाराणसी द्वारा कोविड-19 के संक्रमण से रक्षार्थ देश में लागू संपूर्ण लॉक डाउन के कारण अपनी आजीविका चलाने में असमर्थ, असहाय और जरूरतमंद लोगों के क्षुधा पूर्ति के लिए अघोरेश्वर के दरबार से तकरीबन 62 दिनों तक वाराणसी जनपद के विभिन्न गांवों के अलावा आसपास के जरूरतमंदों के बीच 20 टन से ज्यादा राशन का वितरण 50 पैकेट में गरीबों और जरूरतमंदों के बीच प्रतिदिन 3 किलो गेहूँ का आँटा, 2 किलो चावल, 1 किलो दाल तथा नमक आदि का वितरण कर प्रतिदिन लगभग दो हजार लोगों को एक समय का भोजन का इंतजाम कर देश भर के साधु-संतो की संस्थाओं में अद्वितीय रही। वहीं देश भर के विभिन्न राज्यों में स्थापित शाखा कार्यालयों के अलावा छत्तीसगढ़ के पहाड़ी ईलाकों में बसने वाले गरीब आदिवासी बंधुओं के बीच राशन का वितरण कर बड़े पैमाने पर राहत पहूंचाई गई जिससे जरूरतमंद परिवार अघोरेश्वर का प्रसाद पाकर अभिभूत हुये तो दूसरी तरफ पड़ाव चौराहे पर सेवारत सरकारी चिकित्सक और पुलिस बंधुओं के अलावा अन्य सेवाओं में दिन रात अथक रूप से लगे लोगों को आश्रम की ओर से लगातार गुड़ पानी और आयुर्वेदिक चाय भी उपलब्ध कराकर एक बड़ी राहत दी गई। संस्था के प्रचार मंत्री पारसनाथ यादव एवं पृथ्वी पाल सिंह ने जानकारी देते हुए बताया कि लॉकडाउन के दौरान 9,156 किलोग्राम गेहूं का आटा 6,193 किलोग्राम चावल पूर्ण 2,920 किलोग्राम दाल तथा 1,778 किलोग्राम नमक शासन को प्रदान कर वाराणसी सदर के उप-जिलाधिकारी

निर्देशन में लेखपाल राजेश्वर सिंह 'राजू' एवं लेखपाल भोला शंकर द्वारा वितरित की गई। कहते हैं इस दरबार में सच्चे मन से आनेवाले श्रद्धालु कभी खाली हाथ वापस नहीं जाते हैं इसी बात को चरितार्थ करता महाप्रभु अघोरेश्वर भगवान राम द्वारा स्थापित संस्था का यह सेवा भाव पिछले 58 वर्षों से लगातार समाज से उपेक्षित कुष्ठी बंधुओं की सेवा कर उन्हें नई काया देने के साथ-साथ कई विकट और असाह्य रोगों का इलाज भी अधोरेश्वर द्वारा बताये गये जड़ी बुटियों के माध्यम से की जाती है जहां लोग बड़े संख्या में लाभान्वित हो रहे हैं वहीं श्री सर्वेश्वरी समूह की देशभर में फैली विभिन्न शाखा कार्यालयों द्वारा चाहे प्रवासियों को भोजन बनाकर देना हो या जरुरतमंदों में आवश्यकतानुसार राशन का वितरण करना हो यह सेवा कार्य देश भर में फैली शाखाओं से हजारों परिवारों के भोजन की व्यवस्था नित्यप्रति की जा रही है।

विदित हो कि परमपूज्य अघोरेश्वर भगवान राम जी द्वारा मानवता के कल्याणार्थ और रक्षार्थ सन् 1961 में स्थापित श्री सर्वेश्वरी समूह अपने वर्तमान अध्यक्ष और अघोरेश्वर महाप्रभु के उत्तराधिकारी पूज्यपाद औघड़ गुरुपद संभव राम जी के निर्देशन में वर्षपर्यंत देश के विभिन्न क्षेत्रों में पीड़ित और उपेक्षित जनों तथा वन प्रदेशों के आदिवासी बंधुओं की सेवा-सुश्रूषा करता रहता है जिससे देश भर के लाखों जरुरतमंद लाभान्वित होते हैं।

तप और साधना का पारंपरिक रूप बदलकर सेवा की एक नवीन तपोस्थली को निर्मित किया है-नरेन्द्र मोदी

-ओ0 पी0 शुक्ला

पूज्यपाद बाबा गुरूपद संभव रामजी

अघोरेश्वर भगवान राम के श्री चरणों को नमन कर कहा कि निःस्वार्थ सेवा, त्याग, समर्पण और तपस्या मुर्तिमान हुई है

देश की यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी गत दिनों बनारस दौरे के क्रम में पड़ाव स्थित श्री सर्वेश्वरी समूह कुष्ट सेवा आश्रम से ठीक सटे पंडित दीनदयाल उपाध्याय के प्रतिमा के अनावरण के मौके पर हर- हर महादेव के नारे के साथ कार्यक्रम की शुरूआत कर काशी वासियों को महाशिवरात्रि, रंग भरी एकादशी और होली की बधाई दी। इस मौके पर प्रधानमंत्री ने परम पूज्य अघोरेश्वर भगवान राम के श्री चरणों को नमन कर कहा कि मां गंगा के तट पर आज एक अदभूत संयोग बन रहा है । उन्होंने बाबा अवधूत

भगवान राम के तपोस्थली का वर्णन करते हुए कहा कि अवधूत बाबा भगवान राम की तपोस्थली इस पार है और अब पंडित दीनदयाल उपाध्याय की स्मृति स्थल भी गंगा पार क्षेत्र में विकसित होगी। उन्होंने कहा कि मां गंगा जब काशी में प्रवेश करती हैं तब उन्मुक्त होकर अपने दोनों भुजाओं को निस्वार्थ सेवा, त्याग, समर्पण और तपस्या मूर्तिमान हुई है । प्रधानमंत्री ने कहा कि इसी तट पर सिद्ध योगी अवधूत बाबा भगवान राम ने तप और साधना का पारंपरिक रूप बदलकर सेवा की एक नवीन तपोस्थली को निर्मित किया है जो आज यह क्षेत्र पंडित दीनदयाल उपाध्याय की संस्कृति स्थल की तुलना अपने नाम की सार्थकता को और सशक्त कर रहा है । उन्होंने कहा कि ऐसा पड़ाव जहां सेवा, त्याग और लोकहित सभी एक साथ जुड़कर दर्शनीय स्थल के रूप में विकसित होगा। मालूम हो कि बाल्यावस्था में ही घर-बार छोड़कर अवधूत बाबा भगवान राम जी किसी अदृश्य शक्ति की खोज में बनारस पहुंचे थे और यहीं से उन्हें रविंद्र पुरी स्थित किनाराम मठ का पता चला जहां से अघोर दीक्षा लेकर वर्षों तक साधना में बिताये और 21 सितम्बर 1961 को श्री सर्वेश्वरी समूह की नींव भी रखी जहां सामाजिक तिरस्कार का दंश झेल रहे कुष्ठ रोगियों की सेवा को एकमात्र उद्देश्य बनाया। कहते हैं कुष्ट रोगियों को यहां दवा के साथ दुआ भी मिलती है। अघोरेश्वर बहुत दयालु थे ,लेकिन उतना ही अपने समाज के भलाई के लिए लोगों से नाराज भी होते थे । ऐसे सरकार बाबा अवधूत भगवान राम से मिलने अब तक पंडित जवाहरलाल नेहरू से लेकर पूर्व कई प्रधानमंत्री, केन्द्रीय मंत्री से लेकर मॉरीशस के उच्चायुक्त भी उनके भक्तों में शामिल थे और सरकार बाबा से आशीर्वाद लेने आश्रम भी आए हैं।

मालूम हो कि सरकार बाबा के आशिर्वाद से अबतक हजारों कुष्ट रोगी स्वास्थ लाभ लेकर समाज में अपना गुजर बसर कर रहे है। वर्तमान में नरसिंहगढ़ रियासत के कुंवर भैरव सिंह की गौरवशाली परंपरा के राजकुमार बीसवीं सदी के सबसे देदीप्यमान सूरज, अघोर परंपरा के क्रांतिकारी महापुरूष परम पूज्य अघोरेश्वर भगवान राम जी सरकार बाबा के उतराधिकारी में प्रतिष्ठित हैं। दैहिक तथा अध्यात्मिक दोनों में यश को आगे बढ़ाते हुये सुनामधन्य कुमार यशोवर्द्धन सिंह जी अब गुरूपद संभव राम जी के रूप में देदीप्यमान हैं और आपके भौतिकवादी कृत्रिमायुक्त मानव समाज को सही राह दिखा रहे है साथ ही आप भारतीय सभ्यता संस्कृति की रक्षा करने की निरंतर प्रेरणा देते रहते हैं जिससे पृथ्वी, प्रकृति और पर्यावरण की रक्षा वाली आपकी दिनचर्या देश भर में फैले अनुयायियों के लिये जीवनदायिनी है।

अघोरेश्वर के प्रसाद से मिली कुष्टियों को निर्मल काया, समाज में पुर्नप्रतिष्ठित हुये समाज से बहिस्कृत

महान संत अघोरेश्वर भगवान राम द्वारा स्थापित संस्था ने उपेक्षित जनों की सेवा कर बनाया किर्तीमान

मानव कल्याण के उद्देश्य को लेकर स्थापित अघोर पीठ, श्री सर्वेश्वरी समूह, देवस्थानम, कुष्ठ सेवा आश्रम पड़ाव, वाराणसी द्वारा जन कल्याण हेतु चलाए जा रहे कार्यक्रम में के अंतर्गत बड़े संख्या में समाज से उपेक्षित कुष्टी बंधुओं का इलाज कर उन्हें नई काया प्रदान की गई वहीं सर्वेश्वरी समूह द्वारा संचालित कुष्ठ सेवा आश्रम द्वारा इस वर्ष 72,995 रोगियों की निःशुल्क चिकित्सा की गई जिसमें महाकुष्ट के 900 तथा शुद्र कुष्ट के 6,750 रोगियों के अलावा संस्था द्वारा आयोजित शिविरों में शेष सामान्य और असहाय रोगियों के अलावा 2,276 नेत्र रोगियों को चश्मा तथा 135 रोगियों को मोतियाबिंद का ऑपरेशन कर लेंस प्रत्यारोपण का कार्य किया गया । उपरोक्त जानकारी गत दिनों गुरू पूर्णिमा के मौके पर आयोजित संस्था के 59 वें अधिवेशन मौके पर संस्था के

पूज्यपाद बाबा गुरुपद संभव राम जी

मंत्री एस पी सिंह ने देते हुये संस्था द्वारा जनहित में किये जा रहे कार्यों का उल्लेख कर बताया कि इसी क्रम में 3,026 मिर्गी रोगियों को फकीरी दवा पिलाई गई तथा जरूरतमंद मरीजों का निशुल्क रक्त समूह रक्तचाप रक्त शर्करा हेपिटाइटिस आदि रोगों का परीक्षण भी किया गया वही विकलांगों को वाकर छड़ी तथा जन्मांधों में घुंघरूदार लाठियां और असहायों के बीच मच्छरदानी का वितरण किया गया । कोरोना महामारी के दौरान संस्था द्वारा जरूरतमंदों के बीच वितरित किये ये खाद्य साम्री का उल्लेख कर बताया कि सबसे महत्वपूर्ण महामारी के दौरान सरकार द्वारा लगाए गए लॉकडाउन के बीच असहाय , गरीब एवं जरूरतमंदों के बीच 53 टन से अधिक खाद्यान्न के साथ नमक ,पानी का बोतल, साबुन ,मास्क, गमछा , सैनिटाइजर आदि का वितरण कर हजारों प्रवासी कामगारों को नाश्ता और भोजन देने के साथ-साथ ड्यूटी में लगे सरकारी कर्मियों को आयुर्वेदिक काढ़ा और चाय पिलाकर एक बड़ी राहत दी गई । इसी दौरान दिल्ली में फंसे एक युवक के क्रमशः 10 और 12 वर्ष के दो पुत्र के दुखद मौत के बाद प्रतापगढ़ जिले के उमरा शाखा कार्यालय के द्वारा अंत्येष्टि क्रिया को संपन्न कराया गया । उन्होंने पिछले वर्ष का लेखा-जोखा देते बताया कि संस्था द्वारा चलाए गए जनहित कार्यक्रम के दौरान गत वर्ष के ठंड के मौसम में 4,874 जरूरतमंदों के बीच कंबल और रजाई का वितरण कर अलाव की व्यवस्था की गई वही गर्मी के मौसम में भी जगह-जगह शीतल जल का प्याऊ लगाया गया इतना ही नहीं चिकित्सालय में भर्ती मरीजों को हस्तचलित पंखे ,फल ,ब्रेड, बिस्किट आदि का वितरण कर मंदिर ,मस्जिद ,गिरजाघर, गुरु द्वारा एवं अन्य पूजा स्थलों में झाड़ू ,अगरबत्ती ,माचिस आदि का वितरण कर देव स्थलों की साफ- सफाई भी की गई । मालूम हो कि वैश्विक महामारी कोविड-19 के चुनौतिपूर्ण और कठिन समय में संस्था के अध्यक्ष पूज्यपाद बाबा गुरुपद संभव राम जी की सद्प्रेरणा से श्री सर्वेश्वरी समूह ने अनेक जनसेवा कार्यक्रमों को बखूबी संपन्न किया वहीं संस्था के संस्थापक परमपूज्य अघोरेश्वर महाप्रभु द्वारा राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानना, मानवमात्र को अपना भाई समझना, नारीमात्र के प्रति मातृभाव रखना , बालक-बालिकाओं के विविध विकास के लिए अनुकूल वातावरण बनाना ,असहाय एवं उपेक्षित लोगों की सेवा करना तथा उनके प्रति समाज में संगठित भावनाएं जागृत करना , मानव धर्म की मूल भावनाओं के विचार-विनिमय के लिए एक समान मंच प्रदान करना तथा सामाजिक कुरीतियां रूढ़िवादिता, अंधविश्वास , नशाखोरी ,तिलक-दहेज आदि के सम्पूर्ण उन्मूलन हेतु सफल प्रयास करने जैसे उन्नीस सूत्रीय कार्यक्रम को लेकर समूह के प्रधान कार्यालय के साथ-साथ इसकी देश भर में फैली अनेक शाखाएं इन उन्नीस सूत्रीय कार्यक्रमों को धरातल पर बखूबी उतार रही हैं। इसी उद्देश्य को लेकर कुष्ठ जैसे असाध्य रोग से पीड़ित लाखों मरीजों को अघोरेश्वर महाप्रभु ने विशुद्ध आयुर्वेदिक और फकीरी पद्धति से पूर्णतया स्वस्थ कर समाज में ससम्मान प्रतिठित किया है। इसके लिए रिकार्डों की विश्वविख्यात पुस्तक "गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स" में अवधूत भगवान राम कुष्ठ सेवा आश्रम का नाम जहॉ अंकित किया गया है वहीं "लिमका बुक ऑफ रिकॉर्ड्स" में भी संस्था का नाम जहॉ अंकित है वहीं संस्था को अपनी अप्रतिम सेवाओं के लिए अनेक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मान अब तक मिल चुके हैं।

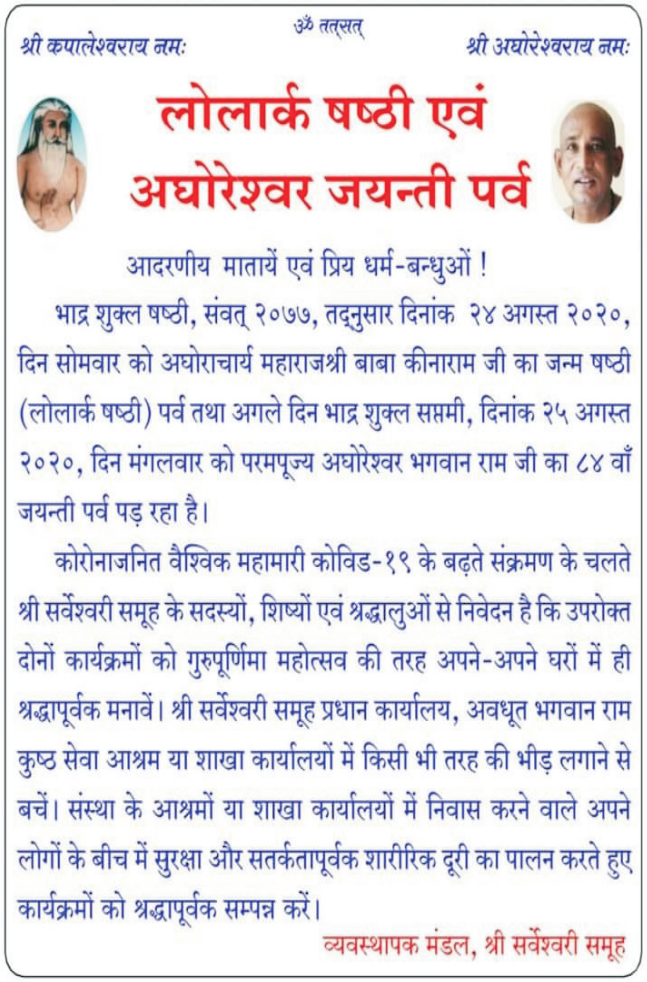

शिक्षा के क्षेत्र में डॉ के.सी. श्रीवास्तव का योगदान सराहनीय

डीएवी कोयला नगर पब्लिक स्कूल को शिखर तक पहुँचाने का श्रेय एक सुसंस्कृत परिवार में पैदा हुए, डॉ कैलाश चंद्र श्रीवास्तव के कुशल नेतृत्व को दिया जाए तो इसमें कोई किन्तू–परन्तु नहीं है। ज्ञान के विकास के क्षेत्र में एवं वैदिक गुणों और मूल्यों के साथ शिक्षा के संवर्धन में उनका योगदान मूल्यवान रहा है। उनके कौशल ने उन्हें इतिहास बनाने में सक्षम बना दिया है, जो अब शिक्षाविदों में एक मिसाल के रूप में कार्य कर रहा है। सिद्धांत से अधिक अभ्यास में उनका अत्यधिक विश्वास वास्तव में सराहनीय है।

एक प्रिंसिपल के रूप में 1990 से डीएवी स्कूल की सेवा की शिक्षाविदों में उत्कृष्टता प्राप्त करने और सामग्री के व्यवस्थित वितरण को प्रसारित करने तथा प्रगति पर प्रतिक्रिया को प्रोत्साहित करने में उनके प्रयास सराहनीय है। 1990 से 2018 तक प्रधानाचार्य के रूप में उनकी प्रेरणादायक यात्रा उनकी कड़ी मेहनत और दृढ़ संकल्प की बात को प्रदर्शित करती है। उनका अनुशासन और अखंडता उनके दैनिक जीवन में परिलक्षित होता है।

डीएवी स्कूल, कोयला नगर को शिखर पर ले जाने के लिए उनके योगदान को देखते हुए डीएवी कॉलेज मैनेजिंग कमेटी (नई दिल्ली) ने वर्ष 2012 में क्षेत्रीय निदेशालय की संदिग्ध जिम्मेदारी सौंपी। डॉ के.सी. श्रीवास्तव की गतिशीलता का ही परिणाम हम कोयला नगर डीएवी स्कूल को विकसित रूप में साफ देख सकते हैं। उनकी विचारधारा एवं कुशल नेतृत्व का नतीजा हमें डीएवी कोयला नगर स्कूल के वर्तमान रूप में नजर आता है।

के.सी. श्रीवास्तव को हाल ही में गोवा में आयोजित ''कॉलेज टू कैम्पस शिखर सम्मेलन – 2017'' के अवसर पर माननीय श्रीमती मृदुला सिन्हा (राज्यपाल) गोवा के द्वारा 'अकादमिक उत्कृष्टता पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है। इसके अलावा, उन्हें माननीय श्री कपिल सिब्बल, भारत के पूर्व केंद्रीय शिक्षा मंत्री द्वारा ''सीबीएसई मेरिट अवॉर्ड'' भी दिया गया है। डीएवी संगठन ने उन्हें ''महात्मा हंसराज अवॉर्ड और टीचर मेरिट अवार्ड'' के साथ भी सम्मानित किया है, जो उन्हें ज्ञान, अखंडता, अनुशासन, परिश्रम, समर्पण और उत्कृष्टता के प्रति वचनबद्धता के उच्चतम गुणों के लिए सैनिक स्कूल में शिक्षक के रूप में भी प्रदान किया गया है।

अब, क्षेत्रीय निदेशक (झारखंड जोन) के रूप में उनका कदम प्रेरक और रोमांचक लेकिन चुनौतीपूर्ण भी है। उनकी एकमात्र आत्मनिर्भरता ने उन्हें शिक्षा के उफनते जल में उत्कृष्टता के जहाज पर संचालनकर्ता के रूप में निर्देशित किया है। वह अब ब्रांड के रूप में डीएवी को आकार देने और पद्मश्री पूणम सूरी, राष्ट्रपति (डीएवी सीएमसी, नई दिल्ली) के सपने को वास्तविकता में बदलने के लिए तैयार हैं और संलग्न हैं।

''वह सफलता को चमकाने की यात्रा में एक अनुयायी बनने के लिए प्रतिबद्ध हैं''

स्फटिक की विशेषताएँ

स्फटिक एक रंगहीन, पारदर्शी, निर्मल और शीत प्रभाव वाला उपरत्न है। इसको कई नामों से जाना जाता है। जैसे-सफेद बिल्लौर, अंग्रेजी में रॉक क्रिस्टल, संस्कृत में सितोपल, शिवप्रिय, काँचमणि और फिटक आदि। इसे फिटकरी भी कहा जाता है। सामान्यतः यह काँच जैसा प्रतीत होता है, परंतु यह काँच की अपेक्षा अधिक दीर्घजीवी होता है। कटाई मे काँच के मुकाबले इसमें कोण अधिक उभरे होते हैं। इसकी प्रवृत्ति ठंडी होती है। अतः ज्वर, पित-विकार, निर्बलता तथा रक्त विकार जैसी व्याधियों में वैद्यजन इसकी भस्मी का प्रयोग करते हैं। स्फटिक को नग के बजाय माला के रूप में पहना जाता है। स्फटिक माला को भगवती लक्ष्मी का रूप माना जाता है।

रासायनिक संरचना-

स्फटिक की रासायनिक संरचना सिलिकोन डाइऑक्साइड है। तमाम क्रिस्टलों में यह सबसे अधिक साफ, पवित्र और शक्तिशाली है। स्फटिक शुद्ध क्रिस्टल है, या फिर यह भी कहा जा सकता है कि अंग्रेजी के शुद्ध क्वार्ट्ज क्रिस्टल का देशी नाम स्फटिक है। प्योरा स्नो या व्हाइट क्रिस्टल भी इसी के नाम हैं। यह सफेदी लिए हुए रंगहीन, पारदर्शी और चमकदार होता है। यह सफेद बिल्लौर अर्थात रॉक क्रिस्टल से हू-ब-हू मिलता है।

विशेषताएँ-

स्फटिक की सबसे बड़ी खूबी यह है कि यह पहनने वाले किसी भी पुरुष या स्त्री को एकदम स्वस्थ्य रखता है। इसके बारे में यह भी माना जाता है कि इसे धारण करने से भूत-प्रेत आदि की बाधा से मुक्त रहा जा सकता है। कई प्रकार के आकार और प्रकारों में स्फटिक मिलता है। इसके मणकों की माला फैशन और हीलिंग पावर्स दोनों के लिहाज से लोकप्रिय हैं। इससे इंद्रधनुष की छटा-सी खिल उठती है। इसे पहनने मात्र से ही शरीर में इलैक्ट्रोकेमिकल संतुलन उभरता है और तनाव-दबाव से मुक्त होकर शांति मिलने लगती है। स्फटिक की माला के मणकों से रोजाना सुबह लक्ष्मी देवी का मंत्र जप करना आर्थिक

तंगी का नाश करता है। स्फटिक के शिवलिंग की पूजा-अर्चना से धन-दौलत, खुशहाली और बीमारी आदि से राहत मिलती है, तथा सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त होती है।

रुद्राक्ष और मूंगा के साथ पिरोया गया स्फटिक का ब्रेसलेट खूब पहना जाता है। इससे व्यक्ति को डर और भय नहीं लगता। उसकी सोच-समझ में तेजी और विकास होने लगता है। मन इधर-उधर भटकने की स्थिति में, सुख-शांति के प्राप्ति के लिए स्फटिक पहनने की सलाह दी जाती है। कहते हैं कि स्फटिक के शंख से ईश्वर को जल तर्पण करने वाला पुरुष या स्त्री जन्म-मृत्यु के फेर से मुक्त हो जाता है।

इसकी प्रवृत्ति (तासीर) ठंडी होती है। अतः ज्वर, पित्त-विकार, निर्बलता तथा रक्त विकार जैसी व्याधियों में वैद्यजन इसकी भस्मी का प्रयोग करते हैं। स्फटिक कम्प्यूटर से निकलने वाले बुरे रेडिएशन (यानी हानिकारक विकिरण) को अपनी ओर खींचकर सोख लेती है। स्फटिक को नग के बजाय माला के रूप में पहनना ही उचित है। स्फटिक माला को भगवती लक्ष्मी का रूप माना जाता है।

अन्य उपयोग-

लक्ष्मी प्राप्ती के लिए इसे पूजा स्थल में रखें तथा इससे "ऊँ श्री लक्ष्म्ये नमः" का एक माला जाप प्रतिदिन करें। स्फटिक को हीरे का उपरत्न कहा जाता है इसे स्फटिक मणि भी कहा जाता है। स्फटिक बर्फ के पहाड़ों पर बर्फ के नीचे टुकड़े के रूप में पाया जाता है। यह बर्फ के समान पारदर्शी और सफेद होता है। यह मणि के समान है। इसलिए स्फटिक के श्रीयंत्र को बहुत पवित्र माना जाता है। यह यंत्र ब्रह्मा, विष्णु, महेश यानि त्रिमूर्ति का स्वरूप माना जाता है। स्फटिक श्रीयंत्र का स्फटिक का बना होने के कारण इस पर जब सफेद प्रकाश पड़ता है तो ये उस प्रकाश को परावर्तित कर इन्द्र धनुष के रंगों के रूप में परावर्तित कर देती है।

यदि आप चाहते हैं कि आपकी जिन्दगी भी खुशी और सकारात्मक ऊर्जा के रंगों से भर जाए तो घर में स्फटिक श्रीयंत्र स्थापित करें। यह यंत्र घर से हर तरह की निगेटिव एनर्जी को दूर करता है। घर में पोजीटिव माहौल को बनाता है। जिस घर में यह यंत्र स्थापित कर दिया जाता है वहाँ पैसा बरसने लगता है साथ ही जो भी व्यक्ति इसे स्थापित करता है उसके जीवन में नाम, पैसा, दौलत, शोहरत सब कुछ होता है। स्फटिक की सबसे बड़ी खूबी है कि यह पहनने वाले या वाली को एकदम फिट रखता है और बताते हैं कि इसका साथ भूत-प्रेत बाधा से मुक्त रखता है। स्फटिक में दिव्य शक्तियाँ या ईश्वरीय शक्तियाँ मौजूद होती हैं। इस कदर कि स्फटिक में बंद एनर्जी के जरिए आपकी तमन्नाओं को ईश्वर तक खुद-ब-खुद पहुँचाता जाता है। फिर यह धारण करने वाले के मनमर्जी मुताबिक काम करता जाता है और आपके दिमाग या मन में किसी किस्म के नकारात्मक विचार हरगिज नहीं पनप पाते हैं।

क्रिस्टल थेरपि-

क्रिस्टल थेरेपि ईश्वरीय शक्ति एवं प्रकाश से भरपूर क्रिस्टल का प्रयोग सदियों से ही हमारे संत महात्मा एवं सिद्ध व्यक्ति अपनी प्राण ऊर्जा को विकसित करने तथा नकारात्मक भावनाओं, वातावरण एवं रोगों से बचने के लिए विविध तरीकों से करते रहे हैं। एक सामान्य व्यक्ति के लिए स्फटिक हमेशा एक रहस्मय या सामान्य पदार्थ ही बना रहा और वे इसका लाभ नहीं उठा सके परंतु हाल ही में गहन वैज्ञानिक अनुसंधानों ने व रहस्य शोधक चिकित्सकों ने सैकड़ों प्रयोगों से इसकी उपचारक शक्तियों, शरीर, मन एवं भावनाओं पर होने वाले आध्यात्मिक प्रभावों को बखूबी स्थापित किया है। इस कारण स्फटिक चिकित्सा एक अलग चिकित्सा पद्धति के रूप में फैलती जा रही है। प्राचीन काल में लगभग 30,000 वर्ष पहले के लोग भी इसके जादुई गुणों को पहचानते थे व अपनी प्रजा के रोग निदान के लिए इसका प्रयोग करते थे। एटलान्टिस नाम की प्रसिद्ध सभ्यता के लोगों के पास 25 फीट लम्बा और 10 फीट चौड़ा विशाल क्वाट्र्ज क्रिस्टल था जिसके ऊर्जा क्षेत्र का प्रयोग

करके वहाँ के लोगों की बीमारियों को ठीक किया जाता था। यह कुदरती हरफनमौला पदार्थ दो प्राकृतिक तत्वों ऑक्सीजन व सिलिकॉन के मिश्रण से बना है। जब यह दोनों तत्व गर्मी और असहाय दबाव के साथ भूगर्भ में एक साथ जुड़ते हैं तो कुदरती स्फटिक का निर्माण होता है। प्राकृतिक स्फटिक के निर्माण में कई सौ वर्ष लग जाते हैं।

एक मेडिकल डॉक्टर भैतिक शरीर का उपचार करता है। एक मनोचिकित्सक मन तथा भावों की चिकित्सा करता है और आध्यात्मिक पुरूष आत्मा का उपचार करता है लेकिन एक उपचारक को तन-मन और भावनाओं तीनों का संतुलित करके उनका उपचार करना चाहिए मनुष्य इन तीनों को संतुलित योग है। मानव शरीर ऊर्जा व्यवस्थाओं की श्रृंखला है और जब कोई वस्तु शरीर के किसी भी कोष को ऊर्जा पाने से रोकती है या अवरोध डालती है तो वह कोष कमजोर हो जाता है और वह मस्तिष्क को अधिक ऊर्जा भेजने के लिए संदेश देता है कि मस्तिष्क उसकी प्रार्थन सुन लेता है और उसके पास जो पर्याप्त ऊर्जा होती है उसे भेज देता है तो वह कोष फिर से अपना कार्य सुचारू रूप से करने लगता है अन्यथा शरीर या उसका प्रभावित अंग बीमार पड़ जाता है अर्थात शरीर का सार तत्व ऊर्जा है। स्फटिक विभिन्न प्रकार की ऊर्जाओं को जैविक ऊर्जा में रूपान्तरित करने और उसका विस्तार करने का कार्य करता है जिससे हमारी जैविक ऊर्जा में रूपान्तरित करने और उसका विस्तार करने का कार्य करता है जिससे हमारी जैविक ऊर्जा पुनः शक्ति प्राप्त करती है और संतुलित हो जाती है। स्फटिक शरीर में रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास कर प्राण शक्ति को कई गुना बढ़ा देता है जिससे रोगों से लड़ने की हमारी आन्तरिक क्षमता मजबूत हो जाती है। स्फटिक की प्राकृतिक ऊर्जा केवल शरीर पर ही नहीं बल्कि मन एवं भावनाओं पर भी गहरा प्रभाव डालती है। स्फटिक वास्तव में हमारी मानस दृष्टि की शक्ति को बढ़ा देता है। इसका प्रभाव हमारे मस्तिष्क रूपी कम्प्यूटर पर पड़ता है अतः इसके द्वारा शरीर और मन में रहने वाली नकारात्मक शक्ति को दूर कर उसके स्थान पर सकारात्मक शक्ति का संचार किया जाता है। मन एवं भावनाओं के साथ-साथ शरीर के सातों चक्रों को संतुलित करके स्फटिक उनकी कार्य क्षमता का विकास करता है। क्रिस्टल व्यक्ति के चारो ओर एक शक्तिशाली सुरक्षा शक्ति का क्षेत्र लगभग 100 फीट तक बढ़ा देता है। यह दूसरों द्वारा भेजे गए नकारात्मक विचारों के रूपों को प्रभावहीन कर देता है, इसके प्रयोग के बाद रोगियों के कमरों मे जाने पर भी उनका कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ता। स्फटिक की एक अद्वितीय विशेषता यह है कि यह विचारों और निश्चयों को अपने अन्दर सोख लेता है। हर प्रकार के स्फटिक में अपनी एक अलग तरंग या कंपन होता है। एक उच्छल, स्वच्छ व पवित्र स्फटिक से जो ऊर्जा निकलती है वह जैविक आभा मण्डल द्वारा शीघ्र ही ग्रहण कर ली जाती है। यह ऊर्जा जैविक मंडल से प्रभावति होती है और उस पर अपना प्रभाव डालती भी है। इसकी इसी विशेषता के कारण यह एक कुशल प्राकृतिक उपचार का कार्य करता है। जैसे ही यह किसी सजीव प्राणी, पेड़-पौधे, जीव-जन्तु या वातावरण के संपर्क में आता है, यह उस प्राणी या वस्तु की प्राण ऊर्जा से सामान्य से कई गुना वृद्धि कर देता है जिसे किर्लियन फोटोग्राफी या पेण्डुलम के माध्यम से बखूबी सिद्ध किया जा सकता है। स्फटिक मन की शक्ति को सुझाव दिए गए स्थान पर भेज सकते हैं, जहाँ पर उसे शारीरिक शक्ति के रूप में बदला जा सकता है। क्वाट्ज क्रिस्टल को हाथ में पकड़ने या इसके शरीर के संपर्क में आने से मस्तिष्क में अत्यधिक मात्रा में अल्फा तरंगें उत्पन्न होती हैं। अपनी कल्पना शक्ति को क्रिस्टल में डालने की क्रिया का उपभोग करने से आपका मन मस्तिष्क अल्फा तरंगों की आवृत्ति पर कार्य करने लगता है। अल्फा मन मस्तिष्क का वह स्तर है जिस पर अवचेतन मन के कम्प्यूटर के सुझाव को ग्रहण करने की क्षमता शुरू हो जाती है। इस स्तर पर ही पुराने हानिकारक प्रोग्राम को मिटाकर सही सुझावों द्वारा उपचार की प्रक्रिया की गति को बढ़ा दिया जाता है। दवाओं और सर्जरी के साथ स्फटिक उपचार करने से मरीज को कम समय में अधिक स्वास्थ्य लाभ मिलता है। इसका कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता।

युवाओं के दिमाग पर मारिजुआना का असर

धरती पर सबसे अधिक प्रचलित नशीले पदार्थ भांग, चरस, गाँजा (मारिजुआना-पॅट) मेडिकल साइंस के लिए आश्चर्यजनक रहस्य बने हुए हैं। कई अध्ययनों में पाया गया है कि मिर्गी पोस्ट ट्रॉमेटिक स्ट्रेस डिसऑर्डर, अल्जाइमर, पार्किंसंस, सिकल सैल और स्क्लीरोसिस जैसी बीमारियों के इलाज में मारिजुआना से फायदा हुआ है। लेकिन, नई खोज ने मौज-मजे के लिए सेवन करने वालों पर इसके विपरीत प्रभाव का खुलासा किया है कि कम आयु के लोगों के लिए यह नशीला पदार्थ नुकसानदेह है।

शराब और तंबाकू की तुलना में मारिजुआना का असर ज्यादा गंभीर नहीं है। हेरोइन के समान उससे अचानक मौत का खतरा नहीं है। फिर भी, वैज्ञानिक खोज से साफ संकेत मिले हैं, इससे विकसित हो रहे दिमागों पर खराब असर पड़ सकता है। मानसिक क्षमता प्रभावित हो सकती है। वयस्कों के लिए नुकसानदेह न लगने वाली ड्रग 21 वर्ष से कम आयु के लोगों के लिए जोखिम भरी है। इस आयु में दिमाग का विकास चलता है। हारवार्ड मेडिकल स्कूल के रिसर्चर जोड़ी गिलमैन का कहना है, इससे सिखने और अनुभूति करने की क्षमता पर प्रभाव पड़ता है। वे मारिजुआना का सेवन करने वालों के मस्तिष्क का अध्ययन कर रहे हैं। उनका कहना है, जितनी कम आयु में शुरुआत होती है, उतना ही ज्यादा असर पड़ता है।

वैसे, अमेरिका में मारिजुआना को लेकर गंभीर चेतावनियाँ सामने आ चुकी हैं। 1930 में फेडरल ब्यूरों ऑफ नारकोटिक्स के पहले कमिश्नर हैरी जे एनस्लिंगर ने लिखा था, केवल अनुमान ही लगाया जा सकता है कि मारिजुआना के कारण कितनी

हत्याएँ, आत्महत्याएँ, डकैतियाँ, अपराध और मानसिक पागलपन की घटनाएँ हर वर्ष होती हैं। 1970 में राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन ने कहा था, देश के दुश्मन ड्रग का उपयोग हथियार के रूप में कर रहे हैं। कम्युनिस्ट इसे आगे बढ़ा रहे हैं। वे हमें बरबाद करने की कोशिश में लगे हैं।

इस मामले में अमेरिकी सरकार का वर्तमान रुख आँकड़ों और रिसर्च पर आधारित है। नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर ड्रग एब्यूज (एनआइडीए) के प्रमुख डॉ. नोरा वोल्को का कहना है, मैं युवाओं को नुकसान पहुँचाने की क्षमता को लेकर चिंतित हूँ। यह हमारे देश के लिए विनाशकारी हो सकता है। चूहों पर मारिजुआना के प्रभाव का अध्ययन कर रही यास्मिन हर्ड कहती हैं, सरकार मारिजुआना के बारे में तथ्यों का पता लगाने के प्रयास नहीं कर रही है।

अमेरिका के 23 राज्यों में मारिजुआना को वैध किए जाने के बाद केन्द्र सरकार ने वैज्ञानिक पहलुओं पर ध्यान दिया है। किशोरों के दिमाग पर मारिजुआना, शराब और अन्य नशीले पदार्थों के प्रभाव की स्टडी के लिए 1903 करोड़ रु. की दस वर्षीय योजना को मंजूरी दी गई है। रिसर्चर हाई टेक इमेजिंग का उपयोग कर बढ़ती आयु के साथ दिमाग पर मारिजुआना के असर को जान सकेंगे। रिसर्चर और न्यूरोसाइंटिस्ट एक बात पर सहमत हैं कि मारिजुआना के अच्छे और खराब प्रभाव का स्रोत शरीर का एंडोकेनाबिनॉयड सिस्टम है।

मारिजुआना से नुकसान की रिसर्च में अमेरिका सबसे आगे है। फिर भी कई देश उसके मेडिकल उपयोग पर गौर कर रहे हैं। हिब्रू युनिवर्सिटी, यरूशलम में विश्व की प्रमुख केनाबिनॉयड लैब चल रही है। स्पेन के बॉयोलॉजिस्ट मैनुअल गुजमैन दिमाग के कैंसर ग्लिओब्लास्टोमा को रोकने में कैनाबिनॉयड्स की क्षमता पर काम कर रहे हैं। कनाडा की स्वास्थ्य एजेंसी पीटीएसडी से पीड़ित रिटायर्ड सैनिकों और पुलिस कर्मियों पर मेडिकल मारिजुआना के क्लिनिकल ट्रायल को मंजूरी देने जा रही है।

शरीर के कई हिस्सों को प्रभावित कर सकता है

मारिजुआना

अच्छा प्रभाव–

लाइलाज दर्द – मारिजुआना का केनाबिनायड तत्व दिमाग की कोशिकाओं और इम्यून सिस्टम से मिलकर दर्द कम करता है।

अनिद्रा– मारिजुआना के दो तत्वों टीएचसी और सीबीडी से स्नायुओं के दर्द , अनिद्रा की स्थिति और स्पाटिसिटी का असरकारक इलाज किया जा सकता है।

मिर्गी– जानवरों पर प्रयोगों और मिर्गी से प्रभावित बच्चों के माता–पिता के सर्वे से पता लगा है, सीबीडी से मिर्गी के मरीजों को आराम मिल सकता है।

खराब प्रभाव –

दिमाग पर असर– कम आयु में मारिजुआना के सेवन से मस्तिष्क का विकास प्रभावित हो सकता है। दिमाग के कुछ क्षेत्रों में सर्किट या न्यूरॉन्स के बीच कनेक्शन बदल सकते हैं।

मानसिक बीमारियाँ– युवा अवस्था में इसका उपयोग करने से सिजोफ्रेनिया सहित कई गंभीर मानसिक बीमारियाँ हो सकती हैं।

लत लगने का खतरा– मारिजुआना लेने वाले 9 प्रतिशत लोग इसके आदी हो जाते हैं। किशोर वय में यह अनुपात बढ़कर छह में से एक हो जाता है।

मारिजुआना से पैदा होने वाले एंडोकनाबिनॉयड्स दर्द के नियंत्रण, मूड, भूख, याददाश्त और कुछ कोशिकाओं की जिंदगी और मौत के नियमन में भूमिका निभाते हैं। मानसिक अवसाद से संबंधित बीमारी पीटीएसडी के रिसर्चर केनानॉयड के रहस्य का पता लगाने को उत्सुक हैं क्योंकि यह कम्पाउण्ड अप्रिय स्मृतियों को भुलाने में सहायक है। लेकिन मारिजुआना की यह क्षमता कुछ लोगों को नुकसान भी पहुँचाती है। किशोर आयु में दिमाग के विकास में एंडाकेबिनॉयड्स की महत्वपूर्ण भूमिका है। इनकी अधिकता मस्तिष्क के सिस्टम को अस्त–व्यस्त कर सकती है। मारिजुआना का उपयोग करने वाले युवाओं की मानसिक चेतना और दिमाग की गतिविधि पर असर पड़ सकता ह

भोलेनाथ को क्यों प्रिय है भस्म, जानकर भावुक हो जाएंगे,

आप अक्सर सोचते होंगे कि आखिर भगवान भोलेनाथ को विचित्र सामग्री ही प्रिय क्यों है। चाहे वह जहरीला धतूरा हो, या नशीली भांग। गण भी उनके भूत, गले में लिपटे नागदेव... इसी तरह वे अपने तन पर भस्म रमाए रहते हैं। बहुत कम लोग जानते हैं कि उनके शरीर पर लिपटी सौंधी भस्म का क्या कारण है.. आइए आज आपको एक पौराणिक कथा बताते हैं जिसमें छुपा है इसका राज...

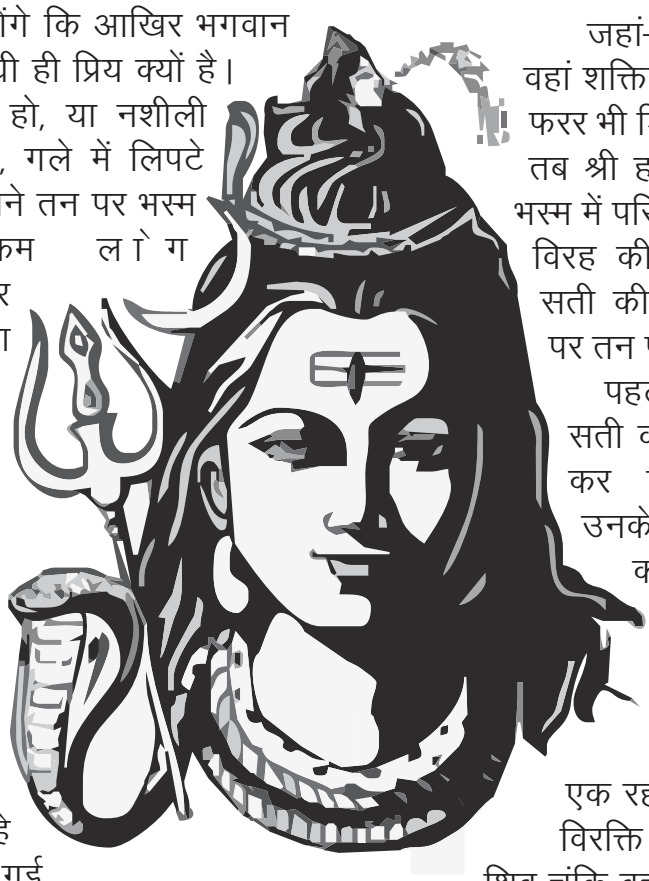

भगवान शिव ने अपने तन पर जो भस्म रमाई है वह उनकी पत्नी सती की चिता की भस्म थी जो कि अपने पिता द्वारा भगवान शिव के अपमान से आहत हो वहां हो रहे यज्ञ के हवनकुंड में कूद गई थी। भगवान शिव को जब इसका पता चला तो वे बहुत बेचौन हो गए। जलते कुंड से सती के शरीर को निकालकर प्रलाप करते हुए ब्रह्माण्ड में घूमते रहे। उनके क्रोध व बेचौनी से सृष्टि खतरे में पड़ गई।

जहां–जहां सती के अंग गिरे वहां शक्तिपीठ की स्थापना हो गई। फरर भी शिव का संताप जारी रहा। तब श्री हरि ने सती के शरीर को भस्म में परिवर्तित कर दिया। शिव ने विरह की अग्नि में भस्म को ही सती की अंतिम निशानी के तौर पर तन पर लगा लिया।

पहले भगवान श्री हरि ने देवी सती के शरीर को छिन्न–भिन्न कर दिया था। जहां–जहां उनके अंग गिरे वहीं शक्तिपीठों की स्थापना हुई। लेकिन पुराणों में भस्म का विवरण भी मिलता है।

भगवान शिव के तन पर भस्म रमाने का एक रहस्य यह भी है कि राख विरक्ति का प्रतीक है। भगवान शिव चूंकि बहुत ही लौकिक देव लगते हैं। कथाओं के माध्यम से उनका रहन–सहन एक आम सन्यासी सा लगता है। एक ऐसे ऋषि सा जो गृहस्थी का पालन करते हुए मोह माया से विरक्त रहते हैं और संदेश देते हैं कि अंत काल सब कुछ राख हो जाना है।

एक रहस्य यह भी हो सकता है चूंकि भगवान शिव को विनाशक भी माना जाता है। ब्रह्मा जहां सृष्टि की निर्माण करते हैं तो विष्णु पालन–पोषण लेकिन जब सृष्टि में नकारात्मकता बढ़ जाती है तो भगवान शिव विध्वंस कर डालते हैं। विध्वंस यानि की समाप्ति और भस्म इसी अंत इसी विध्वंस की प्रतीक भी है। शिव हमेशा याद दिलाते रहते हैं कि पाप के रास्ते पर चलना छोड़ दें अन्यथा अंत में सब राख ही होगा।

शिव का शरीर पर भस्म लपेटने का दार्शनिक अर्थ यही है कि यह शरीर जिस पर हम घमंड करते हैं, जिसकी सुविधा और रक्षा के लिए ना जाने क्या–क्या करते हैं एक दिन इसी इस भस्म के समान हो जाएगा। शरीर क्षणभंगुर है और आत्मा अनंत।

कई सन्यासी तथा नागा साधु पूरे शरीर पर भस्म लगाते हैं। यह भस्म उनके शरीर की कीटाणुओं से तो रक्षा करता ही है तथा सब रोम कूपों को ढंककर ठंड और गर्मी से भी राहत दिलाती है।

रोम कूपों के ढंक जाने से शरीर की गर्मी बाहर नहीं निकल पाती इससे शीत का अहसास नहीं होता और गर्मी में शरीर की नमी बाहर नहीं होती। इससे गर्मी से रक्षा होती है। मच्छर, खटमल आदि जीव भी भस्म रमे शरीर से दूर रहते हैं।

महाकाल की भस्मार्ती

उज्जैन स्थित महाकालेश्वर की भस्मार्ती विश्व भर में प्रसिद्ध है। ऐसी मान्यता है कि वर्षों पहले श्मशान भस्म से भूतभावन भगवान महाकाल की भस्म आरती होती थी लेकिन अब यह परंपरा खत्म हो चुकी है और अब कंडे की भस्म से आरती–श्रृंगार किया जा रहा है। वर्तमान में महाकाल की भस्म आरती में कपिला गाय के गोबर से बने औषधियुक्त उपलों में शमी, पीपल, पलाश, बड़, अमलतास और बेर की लकड़ियों को जलाकर बनाई भस्म का प्रयोग किया जाता है।

जलते कंडे में जड़ीबूटी और कपूर–गुगल की मात्रा इतनी डाली जाती है कि यह भस्म ना सिर्फ सेहत की दृष्टि से उपयुक्त होती है बल्कि स्वाद में भी लाजवाब हो जाती है। श्रौत, स्मार्त और लौकिक ऐसे तीन प्रकार की भस्म कही जाती है। श्रुति की विधि से यज्ञ किया हो वह भस्म श्रौत है, स्मृति की विधि से यज्ञ किया हो वह स्मार्त भस्म है तथा कण्डे को जलाकर भस्म तैयार की हो वह लौकिक भस्म है।

क्रूप

डॉ. एच.एन त्रिवेदी
(होमियोपैथिक प्रैक्टीशनर)

बोलचालकी भाषा में इसे काली या सूखी खाँसी कहते हैं। साधारणतः यहा खाँसी 01 वर्ष से लेकर 4-5 वर्ष तक के बच्चों को ही हुआ करती है। इससे ज्यादा उमर हो जाने पर प्रायः नहीं होती और होती भी है तो उतनी भयंकर नहीं होती।

क्रूप दो प्रकार का होता है।- कैटरैल और मेम्ब्रेनस या ट्रक्रूप। गलनली के भीतर एक झिल्ली (मेम्ब्रेन) अर्थात एक प्रकार का सफेद परदा-सा जमकर, जब समस्त श्वासनली-यहाँ तक कि फेफड़े तक-पर आक्रमण हो जाता है और उससे श्वासरोध तथा जबरदस्त तकलीफ होती है, तब उस पीड़ा को ट्रू क्रूप कहते हैं और जब कोई झिल्ली या परदा न जमकर केवल लसदार गोंद की तरह श्लेष्मा जमकर और थोड़ा-सा श्वासकष्ट और श्वासरोध होता है, तब उसको कैटरैल क्रूप कहते हैं।

ट्रू क्रूप के लक्षण- पहले बच्चे की मामूली सर्दी, खाँसी, छींक तथा ज्वर इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं और गलेकी आवाज भी बिगड़ जाती है। कोई एक सोता हुआ बच्चा एकाएक ऐसा घबड़ाकर कि जैसे साँस रुक गई हो-चटसे उठ बैठता है, गले में एक तरह की विचित्र साँय-साँय आवाज होती है और खाँसी शुरू हो जाती है। खाँसी की आवाज ऐसी होती है जैसे किसी धातु के बर्तन पर चोट देने से होती है। कभी-कभी कुत्ता भूंकने जैसी आवाज होती है। बच्चा बड़े कष्ट से खाँसता है, खाँसने के समय मुट्ठी बाँध लेता है, स्पैज्म (आक्षेप) होता है, बेचैन हो जाता है। कभी लेटता है, कभी बैठता है, कभी-कभी गले में दर्द के कारण गलेपर हाथ रखता है। सारे शरीर में पसीना छूटा करता है। साँस लेने के लिये सिर पीछे की तरफ लटकाये रखता है, नाक ऊँची करके जोर से साँस खींचता है, अगर बीमारी कड़ी हो जाती है, तो गलेकी आवाज एकदम बन्द हो जाती है। जो हो, खाँसते-खाँसते उस जमे हुए पर्दे के खण्ड क्रमशः निकल जाते है, तो बच्चा कुछ स्वस्थ्य होता है। सवेरे से लेकर प्रायः दिन भर बहुत कुछ अच्छा रहता है, किन्तु शाम के बाद से फिर उपसर्ग बढ़ने लगते हैं। अगर बीमारी आरोग्य की तरफ अग्रसर होती है, तो क्रमशः ये कृत्रिम या जमे हुए परदे (मेम्ब्रेन) निकल जाते हैं और अगर नहीं निकलते, तो बच्चा क्रमशः कमजोर और सुस्त हो जाता है। नाड़ी की गति मन्द हो जाती है, आँखें धँस जाती हैं ओठ काले पड़ जाते हैं, पसीना होता है। श्वास-प्रश्वास धीमा पड़ने लगता है और बच्चे की मृत्यु हो जाती है। इस बीमारी में कभी-कभी चार ही पाँच दिन में बच्चे की मृत्यु हो जाती है और किसी-किसी को आराम होने में लगभग दो सप्ताह का समय लग जाता है।

कैटरैल क्रूप के लक्षण- प्रायः उपर्युक्त ट्रू क्रूप के लक्षण के समान होते हैं, परन्तु यह सहज ही आरोग्य हो जाता है। इसमें खाँसी के साथ लसदार बलगम निकलता है, गले में घड़-घड़ शब्द होता है। कभी-कभी हूपिंग-कफ के साथ इस बीमारी का भ्रम हो जाता है।

होमियोपैथी औषधी

पहले एकोनाइट और स्पाँजिया पृथक या पर्यायक्रम से जल्दी-जल्दी प्रयोग करना चाहिये। जब खाँसी कुछ ढीली हो जाय, तब हिपर सल्फ, आयोडम, फॉस्फोरस, ऐण्टिम टार्ट, इपिकाक, ब्रोमियम इत्यादि औषधों की जरूरत होती है जो लक्षणानुसार प्रयोग करना होता है। क्रूप के बाद गला फँसना और सर्दी में कार्बो वेज, हिपर, ड्रोसेरा, फॉस, सैंगुनेरिया औषधियों की आवश्यकता पड़ती है।

इलाज किसी योग्य होमियोपैथिक चिकित्सक की देख-रेख में करें।

कभी भुलाए नहीं जा सकेंगे अब्दुल कलाम

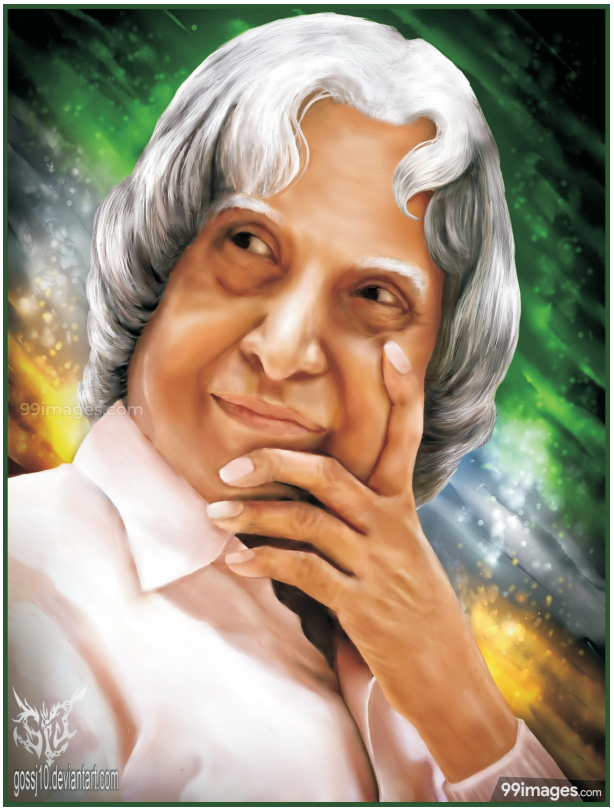

'मिसाइल मैन' के नाम से मशहूर भारत के 11वें राष्ट्रपति भारत रत्न डॉक्टर ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का सोमवार 27 जुलाई 2015 को निधन हो गया। उससे पहले अचानक सेहत खराब होने की वजह से उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया था। सरकार की ओर से पूर्व राष्ट्रपति के निधन पर सात दिनों के लिए राष्ट्रीय शोक की घोषणा की गई। देशवासियों के साथ गहरा जुड़ाव रखने वाले कलाम को देश के पूर्व राष्ट्रपति के तौर पर ही याद नहीं रखा जाएगा बल्कि उनकी मेहनत के लिए भी उन्हें कभी नहीं भुलाया जा सकता। कलाम हमेशा नवजवानों को प्रेरणा देने का काम करते रहेंगे।

सात भाई बहनों में सबसे छोटे अबुल पकिर जैनुल आब्दीन अब्दुल कलाम के माता-पिता ने कभी सपने में भी नहीं सोचा होगा कि रामेश्वरम- जैसे छोटे कस्बे का लड़का सिर्फ भारत ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया को अपनी प्रतिभा से चौंका देगा। उसकी सोच भारत को पूरे विश्व में गर्व करने का जरिया बनेगी। कलाम का जन्म एक तमिल मुस्लिम परिवार में 15 अक्टूबर 1931 को तमिलनाडु में हुआ था। उनके पिता जैनुल आब्दीन एक नौका मालिक थे और माँ आशियम्मा एक गृहणी।

कलाम की शुरुआती शिक्षा रामेश्वरम- के प्राथमिक स्कूल में हुई। गरीब परिवार से ताल्लुक रखने वाले कलाम ने बेहद कम उम्र से कमाना भी शुरू कर दिया था। स्कूल खत्म होने के बाद वे पिता की मदद करने के लिए अखबार बेचते थे। हालांकि स्कूल में कलाम को एवरेज ग्रेड ही मिलते थे, लेकिन उनका मैथ्स की तरफ खास रुझान था। रामनाथपुरम मैट्रिक्युलेशन स्कूल से स्कूलिंग पूरी करने के बाद कलाम ने यूनिवर्सिटी ऑफ मद्रास से 1954 में फिजिक्स में ग्रेजुएशन किया। इसके बाद साल 1955 में उन्होंने मद्रास से एयरोस्पेस इंजिनियरिंग की। हालाकि बहुत कम लोग जानते हैं कि कलाम एक फाइटर पायलट बनना चाहते थे, लेकिन उनका नंबर नहीं आ पाया।

1958 में मद्रास इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से ग्रेजुएशन करने के बाद कलाम ने डिफेंस रिसर्च एंड डिवलपमेंट ऑर्गनाइजेशन (डीआरडीओ) ज्वाइन किया। शुरुआत में उन्होंने इंडियन आर्मी के लिए एक छोटा हेलिकॉप्टर डिजाइन किया था, लेकिन वह इससे संतुष्ट नहीं थे। इसके बाद 1962 में उन्होंने इंडियन स्पेस रिसर्च ऑर्गनाइजेशन (इसरो) ज्वाईन किया। इसरो में आते ही कलाम की प्रतिभा के सब कायल हो गए। 1980 में भारत ने अपने पहले स्वदेशी उपग्रह प्रक्षेपण यान (एसएलवी-3) से रोहिणी सैटलाइट को अंतरिक्ष में सफलतापूर्वक स्थापित किया। कलाम इसके प्रॉजेक्ट डायरेक्टर थे। साल 1965 में कलाम ने डीआरडीओ में स्वतंत्र रूप से रॉकेट प्रॉजेक्ट पर काम करना शुरू किया। कलाम 1992 से 1999 तक प्रधानमंत्री के चीफ साइंटिफिक अडवाइजर और डीआरडीओ के चीफ सेक्रेटरी भी रहे।

कलाम ने भारत को रक्षा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के मकसद से रक्षामंत्री के तत्कालीन वैज्ञानिक

सलाहकार डॉ वी.एस. अरुणाचलम के मार्गदर्शन में 'इंटीग्रेटेड गाइडेड मिसाइल डिवलपमेंट प्रोग्राम (आईजीएमडीपी) की शुरुआत की। इस प्रोग्राम के तहत त्रिशूल, पृथ्वी, आकाश, नाग, अग्नि और रूस के साथ संयुक्त रूप से विकसित ब्रह्मोस जैसी मिसाइलें बनाई गईं। इनकी कामयाबी से भारत उन देशों की कतार में आ गया, जो अडवांस टेक्नॉलोजी एंड वेपन सिस्टम से लैस हैं।

डिफेंस में प्रोग्रेस इसी तरह बनी रहे, इसके लिए कलाम ने डीआरडीओ का विस्तार करते हुए रिसर्च सेंटर इमारत (आरसीआई) जैसे अडवांस रिसर्च सेंटर की स्थापना भी की। उनके ही विजन से भारत ने साल 1998 में 11 और 13 मई को पोखरण में सफल परमाणु परीक्षण किया, जिसकी कई देशों ने निंदा भी की थी, लेकिन इसके बाद भारत का रुतबा पूरी दुनिया में बढ़ गया और कलाम को मिला नया नाम ' मिसाइल मैन'।

डॉ. कलाम ने 25 जुलाई 2002 को भारत के 11वें राष्ट्रपति के रूप में शपथ ली और साल 2007 तक वह इस पद पर रहे। उनका विजन भारत को एक विकसित और सुपरपावर देश बनाना था। उनकी किताब इंडिया 2020 में देश के विकास के लिए उनका विजन साफ देखा जा सकता है। कलाम कहते थे कि सुपर पावर बनने के लिए भारत को कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण, ऊर्जा, शिक्षा व स्वास्थ्य, सूचना प्रौद्योगिकी, परमाणु, अंतरिक्ष और रक्षा प्रौद्योगिकी के विकास पर ध्यान देना होगा।

कलाम ऐसे शख्स थे जिनसे लाखों युवा प्रेरणा लेते हैं, इसके लिए उन्होंने अपनी जीवनी विंग्स ऑफ फायर खूबसूरत अंदाज में लिखी है। उनकी दूसरी किताब 'गाइडिंग सोल्स-डायलॉग्स ऑफ लाइफ' धार्मिक विचारों को दर्शाती है। कलाम के किताबों की साउथ कोरिया में भारी डिमांड है और इन्हें वहाँ बहुत पसंद किया जाता है। इसके अलावा कलाम ने तमिल में कुछ कविताएँ भी लिखी हैं।

कलाम को उनके शानदार योगदान के लिए साल 1981 में पद्म भूषण, 1990 में पद्म विभूषण और सबसे बड़ा नागरिक सम्मान भारत रत्न 1997 में दिया गया। डॉ. जाकिर हुसैन के बाद कलाम दूसरे ऐसे राष्ट्रपति थे, जिन्हें यह पद संभालने से पहले ही भारत रत्न मिल चुका था। इसी साल उन्हें 1997 में इंदिरा गाँधी अवॉर्ड से भी सम्मानित किया गया। कलाम इकलौते ऐसे साइंटिस्ट थे, जिन्हें 30 यूनिवर्सिटीज और संस्थानों से डॉक्टरेट की मानद उपाधि मिली है। कलाम अपने महान व्यक्तित्व के बावजूद अपनी सादगी और सरल व्यवहार के लिए हमेशा जाने जाते रहे हैं और जाने जाते रहेंगे। यही कारण है कि वह बच्चों के बीच भी खूब लोकप्रिय रहे।

डॉ ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के अनमोल विचार

मैं हमेशा इस बात को स्वीकार करने के लिए तैयार था कि मैं कुछ चीजें नहीं बदल सकता।

कृत्रिम सुख की बजाय ठोस उपलब्धियों के पीछे समर्पित रहिये।

आकाश की तरफ देखिये। हम अकेले नहीं हैं। सारा ब्रह्माण्ड हमारे लिए अनुकूल है और जो सपने देखते हैं और मेहनत करते हैं उन्हें प्रतिफल देने की साजिश करता है।

क्या हम यह नहीं जानते कि आत्म सम्मान आत्म निर्भरता के साथ आता है?

इंसान को कठिनाइयों की आवश्यकता होती है, क्योंकि सफलता का आनंद उठाने के लिए ये जरूरी है।

हमें अरब लोगों के देश के रूप में सोचना चाहिए और उसी के मुताबिक काम करना चाहिए। छोटी सोच सही नहीं है। जितना मुमकिन हो, उतने ख्वाब देखिए।

अपने मिशन में कामयाब होने के लिए, आपको अपने लक्ष्य के प्रति एकाग्रचित होना पड़ेगा।

शिखर तक पहुँचने के लिए ताकत चाहिए होती है, चाहे वो माउन्ट एवरेस्ट का शिखर हो या आपके पेशे का।

महान सपने देखने वाले के महान सपने हमेशा पूरे होते हैं।

इन्तजार करने वालों को उतना ही मिलता है जितना संघर्ष करने वाले छोड़ देते हैं।

भगवान, हमारे निर्माता ने हमारे मस्तिष्क और व्यक्तित्व में असीमित शक्तियाँ और क्षमताएँ दी हैं। ईश्वर की प्रार्थना हमें इन शक्तियों को विकसित करने में मदद करती है।

यदि हम स्वतंत्र नहीं हैं तो कोई भी हमारा आदर नहीं करेगा।

उम्र भर लंबी सड़क

–श्रीराम दूबे

बित्तू और इमरती बातें कर ही रहे थे कि सामने से इमरती की महिला कमेटी की चार–पांच महिलाएं आती दिखाई दीं। साथ में एक नया नवहा लड़का भी था। किसी टरक पर खलासी लगा था, सो अपने मां–बाप और भाई–बहनों के साथ चला आ रहा था। चैंपियन ढाबे पर ट्रक लगा होगा, वहीं जाकर आज से ही टरक–खलासी की ड्यूटी पकड़ लेगा। बेटा–भाई देश छोड़कर कमाने परदेस जा रहा है, इसलिए साथ में पूरा परिवार ही ढाबे तक जा रहा है, ट्रक पर चढ़ाकर ही लौटेगा।

समूह के पास आने पर कमेटी की महिला ने पूछा, का हो इमरती भउजी, का बात है, आंख भरी है, कुछ बात भवा है का...?

नाहीं हो, कवनो खास बात नाहीं है, ऊ इनकर एक साथी खलासी रहेन, काल चल बसे, जान–पहचान के थे बेचारे, वही खबर सुनके जी भारी हो गया था, मन बहुत दुखाय गया बहिनी।

यहां तक आपने पिछले अंक में पढ़ा अब आगे.....

'' का भवा रहा, बेराम रहें का?'' बहिनी ने पूछा।

''अरे उहे बेरामी, जे टरकवाले डरेवर–खलासी को परहेज नहीं राखो तो होइ जात है।''

''एचैबी का, एड्स?''

''हां, उहे।''

हाय दइया, फेर एक जान लिहेस दुसमनवा एचैबी, एड्स, एतना समझावा जात है, बाकी कोई बूझे–समझे तब तो।

इ पुरान खलासी रहें, पुरानी एचैबी पकड़े रही, अब के नवा–नवा मरद, मानुष कुछ–कुछ बात बूझे लगे हैं, ऊ सब संजिम से परदेश में रहे तो समझे, बहिनी हमार सबके जलसा–जुलूस फरा।

बातें निकली तो एड्स से मरे खलासी की सड़क पर की लालाएं परत–दर–परत खुलती इ और साथ ही खुलती गई खलासी की ड्यूटी पकड़ने ट्रक पर जा रहे गांव के उस नए जवान लड़के की आंखे भी, खुली आंखों से मुंह बाए एक बात पी रहा था, परदेसी होनेवाला वह गंवई लड़का।

मां ने बेटे की दाढ़ी दोनों हाथों से पकड़ते हुए कहा, बेटवा सुन लियो सब बात, संजिम से रहियों परदेस में बेटा, मन मत बेबस करियो, नहीं तो आपन जान और घर का जहान दूनों बेपानी होई जाए, मन कमजोर होय तो मत जाओ परदेस, हिंयई माटी कोड़ रवन के जी लेंगे हम सब, नाहीं चाही हमें परदेस की कमाई।

आंखे भर आई मां की, गला रुंध गया। बार–बार बेटे के गाल दोनों हाथों से सहला रही थी। बेटे ने मां की हथेलियां जोर से पकड़ लीं, हाथों पर मां ने बेटे के हाथों का भरपूर दबाव महसूस किया, शायद यह दबाव वादा था बेटे का मां के नाम, नहीं नहीं, मन को ढील नहीं देंगे, नहीं होगा मन बेबस। परदेस में रुपया कमाएंगे, एड्स नहीं। मां से ज्यादा बेटे का मन और कौन समझ सकता है, सो आश्वस्त हो चुकी थी मां। गालों से उठकर मां के दोनों हाथ बेटे के माथे पर आ एग आशीर्वाद के रूप में। हाथ बेटे की मंगलकामना लुटा रहे थे।

बित्तू और इमरती भी चैंपियन ढाबे तक जाने के लिए समूह के साथ हो गए। कमेटी की एक महिला ने लड़के के साथ–साथ चलते हुए एड्स के विरुद्ध जनजागरण वाले पोस्टर–कागजात का एक पुलिंदा उसे पकड़ाया, पुलिंदे के ऊपर लिखा हुआ था, एड्स मौत है, इससे बचो। कागज पर एक नजर डाल कर लड़के ने होंठों पर एक पतली हंसी लाकर पोस्टर देने वाली को देखा, हल्की पतली मुस्कान मानो कह रही थी, भउजी! हम बचेंगे, बच के गांव लौटेंगे, कमा कर सिर्फ रुपया लाएंगे, रुपया माने हम गरीबों की जिंदगी। एड्स कभी नहीं लाएंगे, क्योंकि एड्स मौत है, गरीबी से खुद ही हम गरीब मरे जा रहे हैं, इस पर एड्स की मौत, ना भउजी ना।

आज सातवां दिन था। पचास–साठ गांवों में खुशबू सिंह की योजना के मुताबिक नाच मंडली के कार्यक्रम अब तक हो चुके थे। हर पड़ाव पर हजारों की भीड़ जुटती थी। पहले से ही प्रचार होता था कि आज अमुक गांव में कार्यक्रम होगा तो आज फलाने गांव में। एक से एक लोक गायकों के नाम बताए जाते, नचनियों का खुलकर बखान किया जाता, प्रचार सुनकर ही पूरा गांव जुट जाता।

अरे भइया, के के–रही गान–बजान में? कोई बूढ़ा चश्मा उठाकर पूछता। पूछो, के नाहीं रहे दादा, निरहू रहिहें जगेसर रहिहें, बलेसर रहिहें। अरे बप्पा! तीनों जने एक्के संगे, तब तो मजा आई जाए रजऊ। बूढ़ा बोल उठता।

तब तक बगल से कोई नवहा लड़का टपक पड़ता, इहे नाहीं दादा, एक से एक नचनियां हैं मंडली में। बंबई से आई हैं छोकरियां, उहां का कहत हैं। नाच बार कि डांस बार बंद होई गवा है न, सो उहां नाचनेवाली नचनियों को खुशबू मालिक हिंयई बुलवा लिए हैं, गांव में बैठे–बैठे बंबई का नाच देख लो दादा, जी ना जुड़ा जाए तो कहना, हम परसों गए रहे चौबेपुर, वहीं जमी थी नाच मंडली।

का का देख्यों उहां बचवा? बूढ़े की उत्सुकता राके नहीं रुक रही थी। अरे पूछो दादा कि का नहीं देखे, लवण्डियचां ऐसा घुमावदार नाच नाचती हैं कि मन बंबई–बंबई हो जाता है। ऐसा ठुमका लगाती हैं, ऐसा घुमावदार चक्कर लेती हैं कि लहंगा सार अकाशे चढ़ जात है।

सच्चों रे, नहीं अइसन थोड़े होत होई? बुढ़ऊ लार टपकाते।

तोहार कसम दादा, हमरी न मानों तो इ रमेसरा से पूछ लो, लवण्डिया जब नाचते–नाचते चक्कर लिहिस तो लहंगा मुंह पर चढ़ कि नाहीं , अरे लजात काहे है बे, बोलत काहे नाहीं है, सार अब ही मुंह लटकाए चुप्पा ठाढ़ है, लाज लाग रही है और लहंगवा जब मूड़े चढ़ा तो निहुर–निहुर के आपन मूड भुई पर सटाय के इनरासन खोजर रहे, आ इहां मूड गिराय के लजाय रहे हैं, दादा इ सार रमेसरा भितरघुन्ना है भितरघुन्ना, भीतर से बकुला आ बाहर से रामनामी सुग्गा बनत है, का हो मिट्टू राम, कब्बों रामनामी चादर ओढ़त है, आ कब्बों लहंगा ओढ़ का मन कुलबुलात है?

एतना बात जानत है बचवा तो जरूर लहंगा नचनिया के मूड़े गवा होई, ऊ नचनिया आज इहां भी नाचे कि नाहीं? बुढ़ऊ ने होंठ से गिरते लार को हथेली से पोंछते हुए कहा।

नाची दादा, यहां भी नाची, हम पता कर चुके हैं।

आ चक्कर भी काटी नचनिया?

हां, हां चक्कर भी काटी, आ लहंगा भी लहराय के मूड़े जाई, रात के बखत तैयारी से नाच देखने आयो और चश्मा का शीशा जरा मल–मल के साफ करके आयो।

ऊकाहे बचऊ?

अरे चशमवा का शीशा साफ रहे, तब तो सब कुछ साफ लउके, बूझ गए कि नाहीं।

बूझ गए बचऊ। बोलकर बुढऊ मन ही मन रात के नाच की नचनिया आर उसके घुमावदार लहंगे की कल्पना में डूबने–उतराने लगे।

क्या चाक–चौबेद इंतजाम था बाबू खुशबू सिंह का। लोगों को अपने घेरे में लेने के लिए खुश्बू सिंह ने रच–रच कर चक्रव्यूह रचाा था। जो एक बार घुसे खुशबू के घेरे में, उनका घेरे के बाहर जाना नामुमकिन था। गांव के बाहरवाले बाबा के मंदिर के सामनेवाले मैदान में नाच–गोने का स्टेज बना था। स्टेज क्या था, दस बारह बड़ी–बड़ी चौकियां एक साथ्ज्ञ रख दी गई थीं। पीछे बड़ा सा राम–लक्ष्मण–सीता वनगमन के दृश्यवाला परदा लटका हुआ था। उसके पीछे तीन रावटियां लगी थीं, जिनमें नाचने वाली लौंडिया और नाटक के कलाकार मसखरे सज–धज रहे थे। एक टैंट में साजिंदे साज तैयार कर रहे थे।

मैदान के चार कोनो पर बरगद के चार विशाल पेड़ खड़े थे, स्टेज से लेकर बरगद के पेड़ों तक नचदेखवा अपनी–अपनी जगह ले चुके थे। दाहिने वाले पोखर के किनारे चाय–पानी की दुकाने खुल चुकी थी, एक तरफ गांजे की चिलमें सुलग रही थीं तो दूसरी ओर खैनी–तंबाकू की मलाई–ठुकाई हो रही थी।

नाच–गाना शुरू होने में थोड़ी देर थी। साजिंदे स्टेज पर आ चुके थे। इधर माले मुफ्त दिले बेरहम के सिद्धांत पर लोग चाय के कुल्हड़ सुड़कते हुए पान की फरमाइश पर भिड़े थे।

अरे लगाव दुई बीड़ा पर7न तुलसी छोड़, तनी उ डबवा में से भोजा छाप जर्दा भी छोड़ो गुरु, हां अब हुअ न पान बनारसवाला, अब तनी चूना दइदो रजऊ, बइठे बइठे नाचो देखई आ चूनो चटाई। पान की दुकान पर फरमाइशों का मेला लगा हुआ था। कोई अपना रोकड़ा तो लग नहीं रहा था, सब व्यवस्था मालिक खुशबू सिंह की ओर से थी। मुफ्त की चाय, मुफ्त का पान–तंबाकू, बनी बनाई ठोंकी–ठुकाई सुर्ती की छोटी डिबिया भी हाथों हाथ मिल रही थी। गांजा चढ़ाना हो तो कोने में जाओ। बित्ता भर उठ रही है चिलम की लपटें, दूर से ही दावत दे रही हैं। असली चिलमब ाज तो गांजे को गंध से ही पहचान लेते हैं, बाकी धुएं और लौ पर खिचें चले आ रहे हैं, जो चाहोगे, वहीं मिलेगा, मुकम्मल इंतजाम था वह भी मुफ्त, मालिक की ओर से.....

शेष अगले अंक में....

अघोरेश्वर भगवान राम वृद्ध आश्रम

अघोरेश्वर भगवान राम महाविभूति स्थल
गंगा तट, पड़ाव वाराणसी

भारत के लिए.

हमारी प्रगति में समाज की भलाई का
समावेश भी होना चाहिए. यही
विश्वास हमें निरंतर प्रेरित करता है
एक ऐसा राष्ट्र बनाने के लिए,
जो हर भारतीय का सपना है.
भारत, जो सही अर्थ में स्वतंत्र हो!

स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएँ

adani

Growth with Goodness

/AdaniOnline